# भावना बत्तीसी

## (सामायिक पाठ)

आचार्य अमितगति विरचित

सांसारिक भावों से भिन्न अपनी आत्मा की शुद्धता

के मार्ग को प्रशस्त करने वाली

# भावना बत्तीसी

## (सामायिक पाठ)

तथा

आत्मसाधना का पुरुषार्थ जागृत करने वाले व

संसार के रस को घटाने वाले पूज्य गुरुदेवश्री के अपूर्व

# वचनामृत

Exhibit

GURU KAHAN ART MUSEUM

www.gurukahanmuseum.org

Sponsor

Shree
Kundkund - Kahan
Parmarthik Trust
Mumbai

Organiser

PAINTERNET
ART EXCHANGE

www.painternet.com

**First Published 2022**
**By Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust**

All rights reserved only with:
Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg,
Vile Parle (West), Mumbai - 400056.INDIA.
Tel. No.: +91 22 2613 0820
Telefax: +91 22 2610 4912
Email: info@vitragvani.com
Web: www.vitragvani.com

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publishers.

Conceptualized by **Nikhil Mehta & Rahul Jain**
Design by **7thSense**
Photography by **Mr. Vipul Patel**
Edited and visualized by **Rahul Jain**

ISBN No.: 978-93-81057-53-7
Price: INR 200/- & US $5

# अध्यात्मयुगसृष्ट्रा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

# 'भावना बत्तीसी' व पूज्य 'गुरुदेवश्री के वचनामृत'

## : प्रस्तावना :

**मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी।**

**मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।**

श्रुत परम्परा में आचार्य अमितगति द्वारा विरचित 'भावना द्वात्रिंशतिका' अपरनाम 'भावना बत्तीसी' नामक यह स्तोत्र जैन जगत में जन-जन के द्वारा प्रतिदिन सामायिक के रुप में पाठ किया जाता हैं। अध्यात्म रस से गर्भित इस कृति का हिन्दी रुपान्तरण आदरणीय बाबु जुगल किशोरजी युगल द्वारा किया गया हैं। इस स्तोत्र में कुल ३२ पद्यों के द्वारा इस संसार के समस्त हेय पदार्थों का त्याग व परम उपादेय तत्त्व ऐसी अपनी आत्मा का ध्यान करने की बात कही गई हैं। इस स्तोत्र में साम्यभाव की साधना का प्रयोगात्मक प्रयास मुखरित होता हैं। इसी प्रयास के साक्षी रुप में इन ३२ श्लोकों के आधार से ३२ चित्र तैयार किये गये हैं।

वीतरागी सन्तों द्वारा प्रवाहित इस पावन प्रवाह को अनेकों गृहस्थ ज्ञानी-विद्वानों ने आगे बढाया है, जिसमें वर्तमान काल में अध्यात्ममूर्ति पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। गुरुदेवश्री ने अपने पैंतालीस वर्षीय आध्यात्मिक जीवनकाल में परमागमों पर अनवरत प्रवचन कर वीतरागी सन्तों के सन्देशों को जन-जन तक पहुंचाने का महान कार्य किया है। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन/ स्वाध्याय से संग्रहित विशिष्ट वचनामृतों को 'पू. गुरुदेवश्री वचनामृत' नामक ग्रन्थ के रुप में छपाने का कार्य कर सभी जीवों के लिये वचनामृतों के माध्यम से जिनमार्ग के मूल रहस्यों का उद्घाटन भी किया है। इन वचनामृतों से प्रेरित होकर इनके आधार से भी १० पेंटिंग तैयार की गयी हैं, जिन्हे प्रस्तुत पुस्तक में सम्मिलित किया गया हैं। जिससे पात्र जीव इन कलाकृतियों के माध्यम से वचनामृतों का रहस्य समझ सकें।

भावना बत्तीसी के कार्य को चित्ररुप देने में चित्रकार श्री अरविंदा सामंता तथा पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृतों को चित्ररुप साकार करने में जो अनुपम कार्य चित्रकार श्री सिद्धार्थ शिंगाडे द्वारा किया गया है उसके लिये संस्था उनकी आभारी है तथा इस कार्य में कार्यरत गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ की पूरी टीम को धन्यवाद ज्ञापित करती है। स्वचिंतन के साथ सभी जीव 'सामायिक पाठ - भावना बत्तीसी' एवं 'पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत' के रहस्य को समझकर अपना मोक्षमार्ग सरल करें, यही भावना है।

— श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई

भावना द्वात्रिंशतिका 'सामायिक पाठ' के रचयिता

# अमितगति आचार्य

36” x 24” | Acrylic on Canvas

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणीजनों में हर्ष प्रभो।
करुणा स्रोत बहें दुखियों पर, दुर्जन में मध्यस्थ विभो।।१।।

हे भगवान! मेरे मन में सभी जीवों के प्रति प्रेमभाव हो, गुणवान व्यक्तिओं के प्रति हर्ष/प्रसन्नता का, दुःखी जीवों के प्रति दया/करुणा का और विपरीत बुद्धिवाले, वस्तु-स्वभाव को नहीं माननेवाले दुर्जनों के प्रति मध्यस्थता अर्थात् समता का भाव सतत बना रहे। (१)

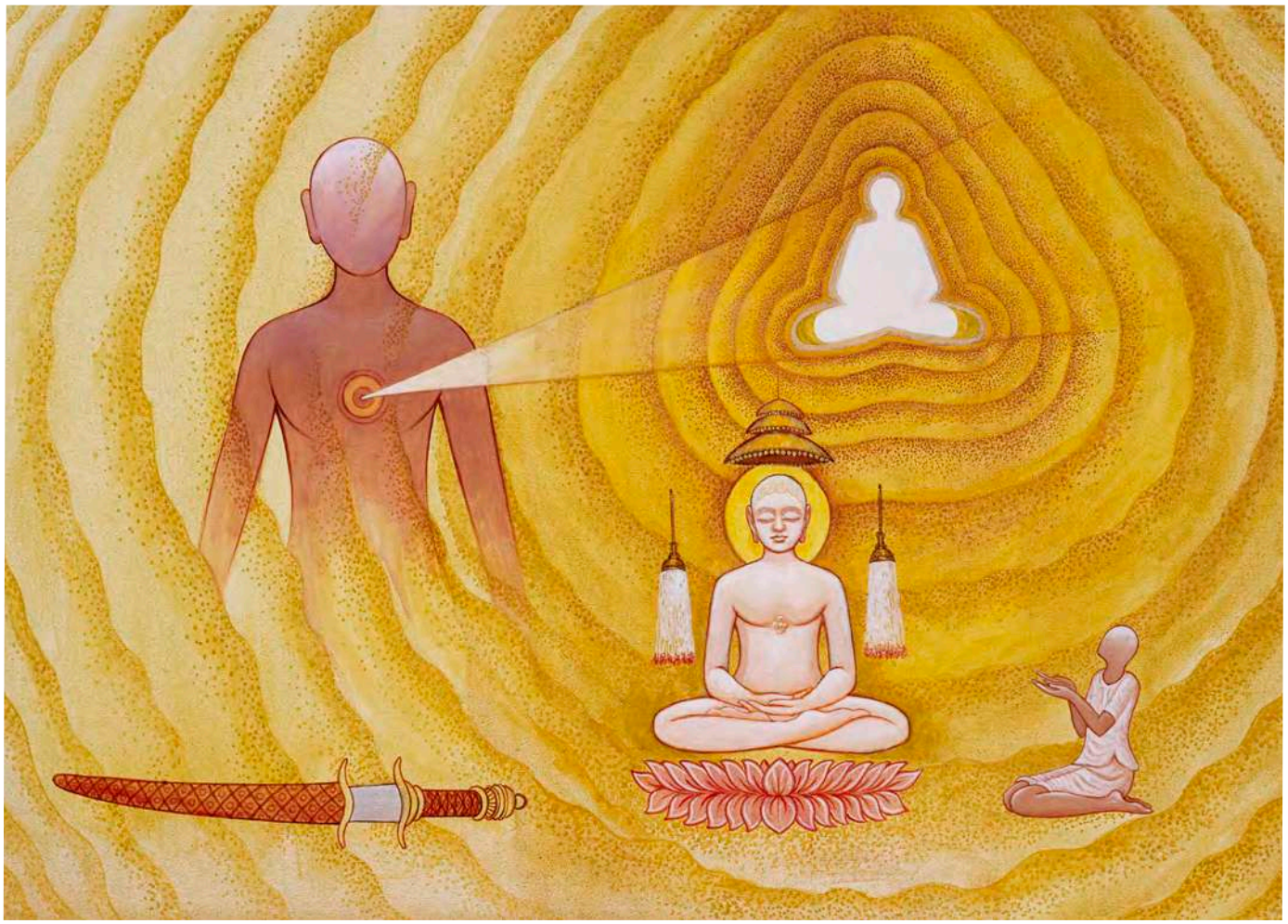

36” x 24” | Acrylic on Canvas

यह अनन्त बलशील आतमा, हो शरीर से भिन्न प्रभो।
ज्यों होती तलवार म्यान से, वह अनन्त बल दो मुझको।।२।।

हे भगवान! जैसे तलवार म्यान से पूर्णतया पृथक् होने के कारण सरलता, सहजता से पृथक् हो जाती है; उसीप्रकार मुझे वह अनन्त आत्म-सामर्थ्य/स्व-पर भेदविज्ञान के बल पर अनंत पदार्थों में से स्वयं को पूर्णतया पृथक् करने की सामर्थ्य प्राप्त हो, जिससे मैं अपने अनन्त वैभव सम्पन्न आत्मा को इस शरीर से श्रद्धा, ज्ञान, चारित्र रुप में पूर्णतया पृथक् कर सकूँ। (२)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

सुख-दुःख, बैरी-बन्धु वर्ग में, काँच-कनक में समता हो।
वन-उपवन, प्रासाद-कुटी में, नहीं खेद नहीं ममता हो ।।३।।

हे प्रभो! मुझमें ऐसा साम्यभाव प्रगट हो जिससे मुझे सुख-दुःख, शत्रु-मित्र, काँच-कनक/सुवर्ण, वन- बगीचा, महल-कुटिया इत्यादि सभी अनुकूल-प्रतिकूल पर परिस्थितिओं में न तो ममत्व हो और न ही खेद-खिन्नता हो। (३)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

जिस सुन्दरतम पथ पर चलकर, जीते मोह मान मन्मथ।
वह सुंदर पथ ही प्रभु मेरा, बना रहे अनुशीलन पथ ।।४।।

हे प्रभो! आपने आत्म-स्थिरता के जिस सुन्दरतम मार्ग पर चलकर मोह, मान, विषय वासना आदि विकारों को जीता है/नष्ट किया है; वही सुन्दर मार्ग मेरा भी अनुशीलन मार्ग बने; अर्थात् मैं भी उसी मार्ग पर चलकर स्वरूप-स्थिर रहूँ। (४)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

एकेन्द्रिय आदिक प्राणी की, यदि मैंने हिंसा की हो।
शुद्ध हृदय से कहता हूँ वह, निष्फल हो दुष्कृत्य प्रभो ।।५।।

हे प्रभो! अज्ञान, कषाय, प्रमाद आदि के वशीभूत मैंने एकेन्द्रिय आदि प्राणिओं की हिंसा की है। अब मैं विशुद्ध भाव से इसका प्रायश्चित करता हूँ; पुनः मैं ऐसा दुष्कृत्य नहीं करुँगा। पूर्वकृत मेरा यह दुष्कृत्य निष्फल हो जाए/मेरे शुद्ध भावों का निमित्त पाकर पूर्वबद्ध कर्म बिना फल दिए ही समाप्त हो जाएँ। (५)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

मोक्षमार्ग प्रतिकूल प्रवर्त्तन, जो कुछ किया कषायों से।
विपथ गमन सब कालुष मेरे, मिट जावें सद्भावों से।।६।।

मैंने कषायों के वशीभूत हो जो भी मोक्षमार्ग से विरुद्ध प्रवृत्ति की है, खोटे मार्ग पर गमन किया है; वह सब मेरी पूर्व कलुषता मेरे सद्भावों अर्थात् सम्यक् परिणमन से नष्ट हो जाए। (६)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

चतुर वैद्य विष विक्षत करता, त्यों प्रभु! मैं भी आदि उपान्त।
अपनी निंदा आलोचन से, करता हूँ पापों को शान्त ।।७।।

हे प्रभो! जैसे चतुर वैद्य अपनी चतुराई से विष को शान्त कर देता है; उसीप्रकार मैं भी अपने पापों को शान्त करने के लिए प्रारम्भ से लेकर अन्त पर्यंत अपने सभी दुष्कृत्यों की निन्दा-आलोचना करता हूँ। (७)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

सत्य अहिंसादिक व्रत में भी, मैंने हृदय मलीन किया।
व्रत-विपरीत प्रवर्तन करके, शीलाचरण विलीन किया ।।८।।

मैंने सत्य, अहिंसा आदि व्रतों का पालन करने में भी अपने मन को मलिन रखा तथा व्रतों से विपरीत प्रवृत्ति करके शीलमय आचरण/सदाचार का भी लोप कर डाला/स्वच्छन्द प्रवर्तन करने लगा। (८)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

कभी वासना की सरिता का, गहन सलिल मुझ पर छाया।
पी-पीकर विषयों की मदिरा, मुझमें पागलपन आया ।।९।।

कभी विषय-वासनामय इन्द्रिय-विषयों की इच्छारुप नदी का गहरा जल मुझ पर ऐसा चढ़ गया कि मैं अपनी सुध-बुध ही खो बैठा। पंचेन्द्रिय विषय-भोगों रुपी शराब को बारम्बार पीने से मुझमें पागलपन आ गया, मैं हित-अहित का विवेक करने में भी असमर्थ हो गया हूँ। (९)

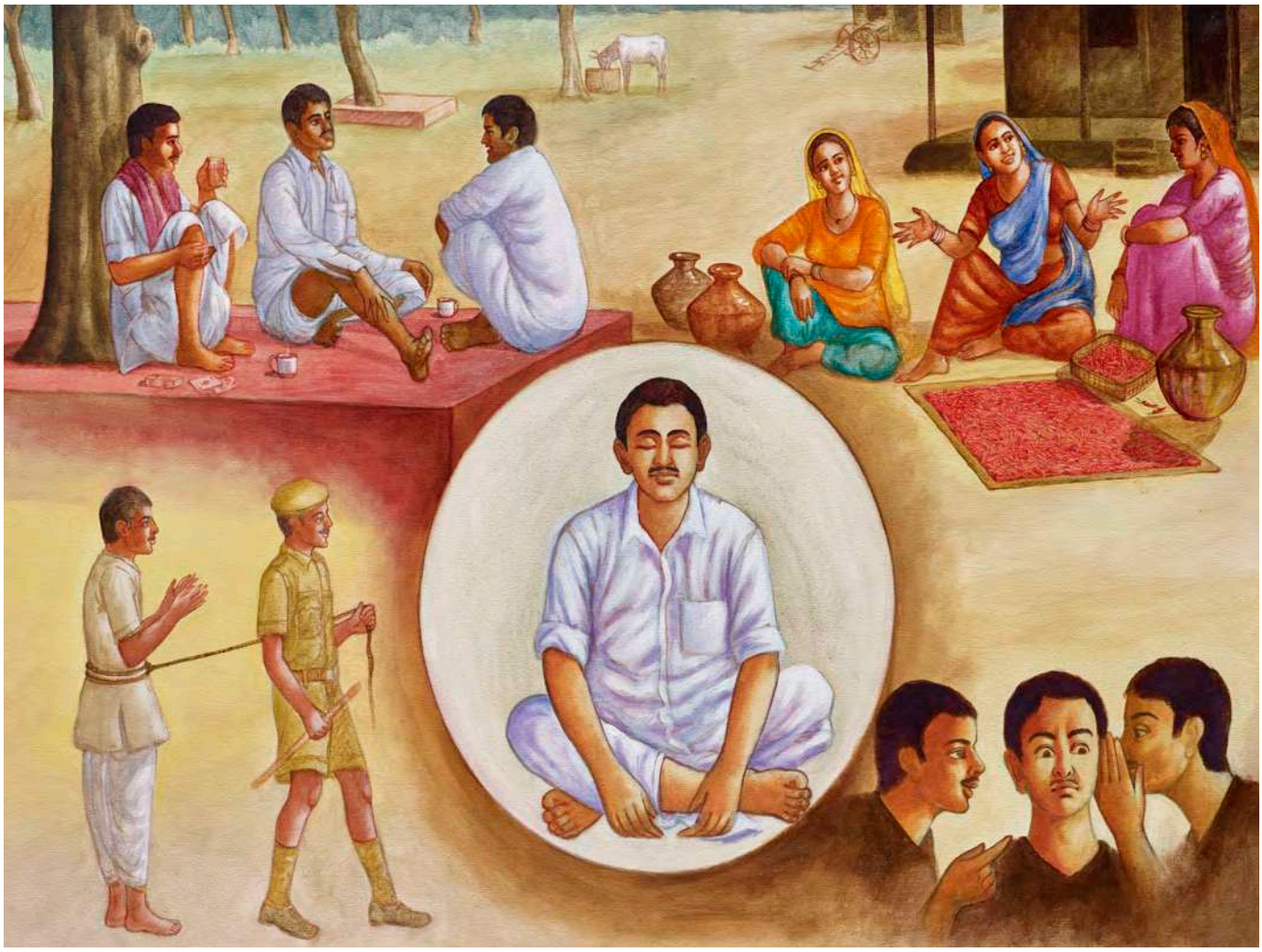

36” x 24” | Acrylic on Canvas

**मैंने छली और मायावी, हो असत्य आचरण किया।**
**पर-निन्दा गाली चुगली जो, मुँह पर आया वमन किया ।।१०।।**

हे भगवान! मैंने सदा छल/माया आदि कषायों के वशीभूत हो असत्य/वस्तु-स्वभाव के विरुद्ध आचरण किया है। मेरे मन में अन्य की निन्दा करने के, चुगली करने के, अन्य को गाली देने के इत्यादी जो भी भाव उत्पन्न हुए, तद्नुसार मुँह से भी उगला/वचनों से भी वैसा ही व्यवहार किया है। (१०)

24” x 24” | Acrylic on Canvas

निरभिमान उज्जवल मानस हो, सदा सत्य का ध्यान रहे।
निर्मल जल की सरिता सदृश, हिय में निर्मल ज्ञान बहे ।।११।।

हे स्वामी! अब मात्र यही चाह है कि मेरा मन अभिमान रहित पवित्र हो जाए, उसमें सदा सत्य का/वस्तु के वास्तविक स्वरुप का ही ध्यान चलता रहे। निर्मल जल से परिपूर्ण नदी के समान मेरे हृदय में भी सदा निर्मल ज्ञान की धारा प्रवाहित होती रहे। (११)

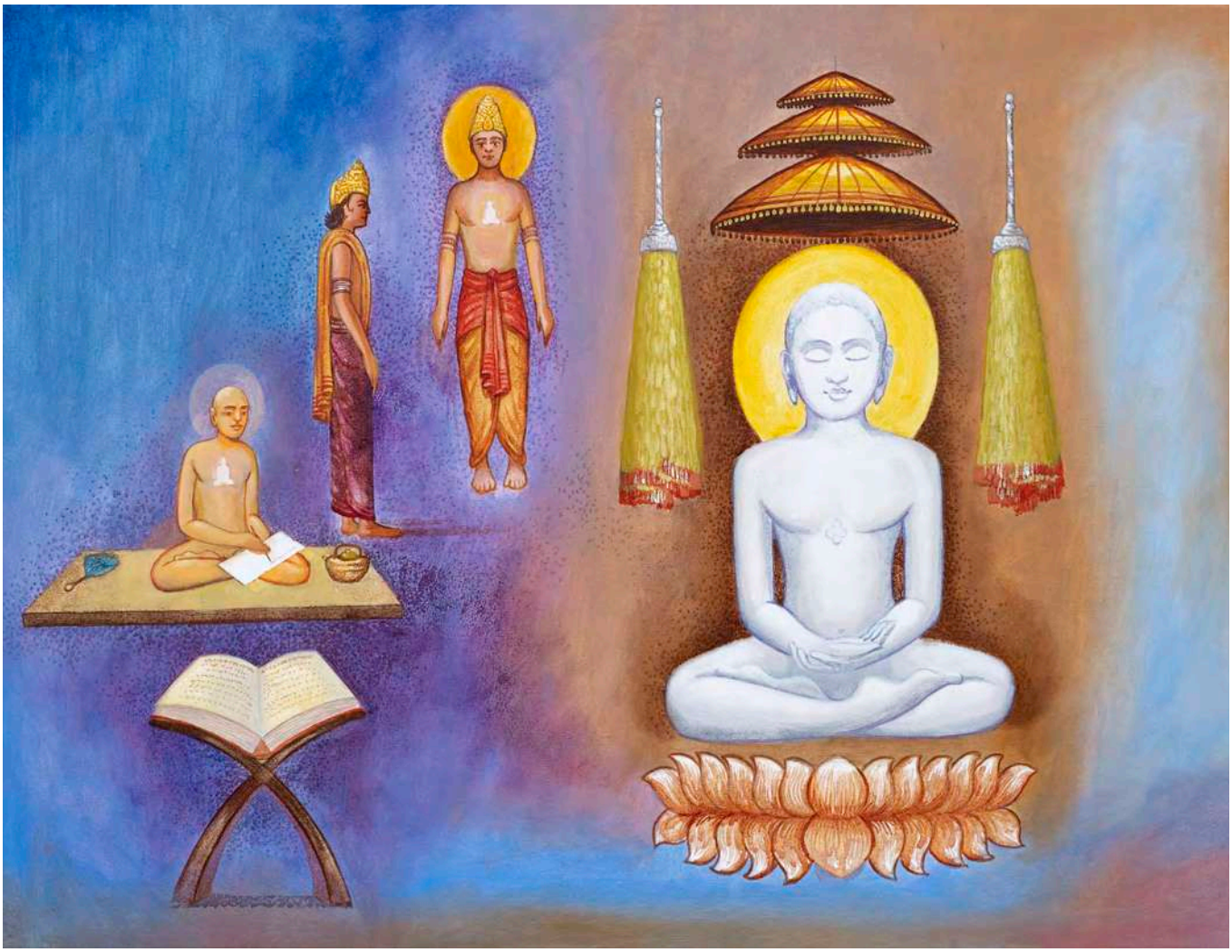

36” x 24” | Acrylic on Canvas

मुनि चक्री शक्री के हिय में, जिस अनन्त का ध्यान रहे।
गाते वेद पुराण जिसे वह, परम देव मम हृदय रहे ॥१२॥

परमपूज्य मुनिराज, चक्रवर्ती, इन्द्र आदि के मन में भी जिस अनन्त वैभव सम्पन्न परमदेव/निज शुद्धात्मा का ध्यान रहता है; वेद-पुराण आदि चार अनुयोगमयी समग्र जिनवाणी जिसका सदा यशोगान करती है, वह परमदेव निजशुद्धात्मा मेरे हृदय में भी सदा विद्यमान रहे। (१२)

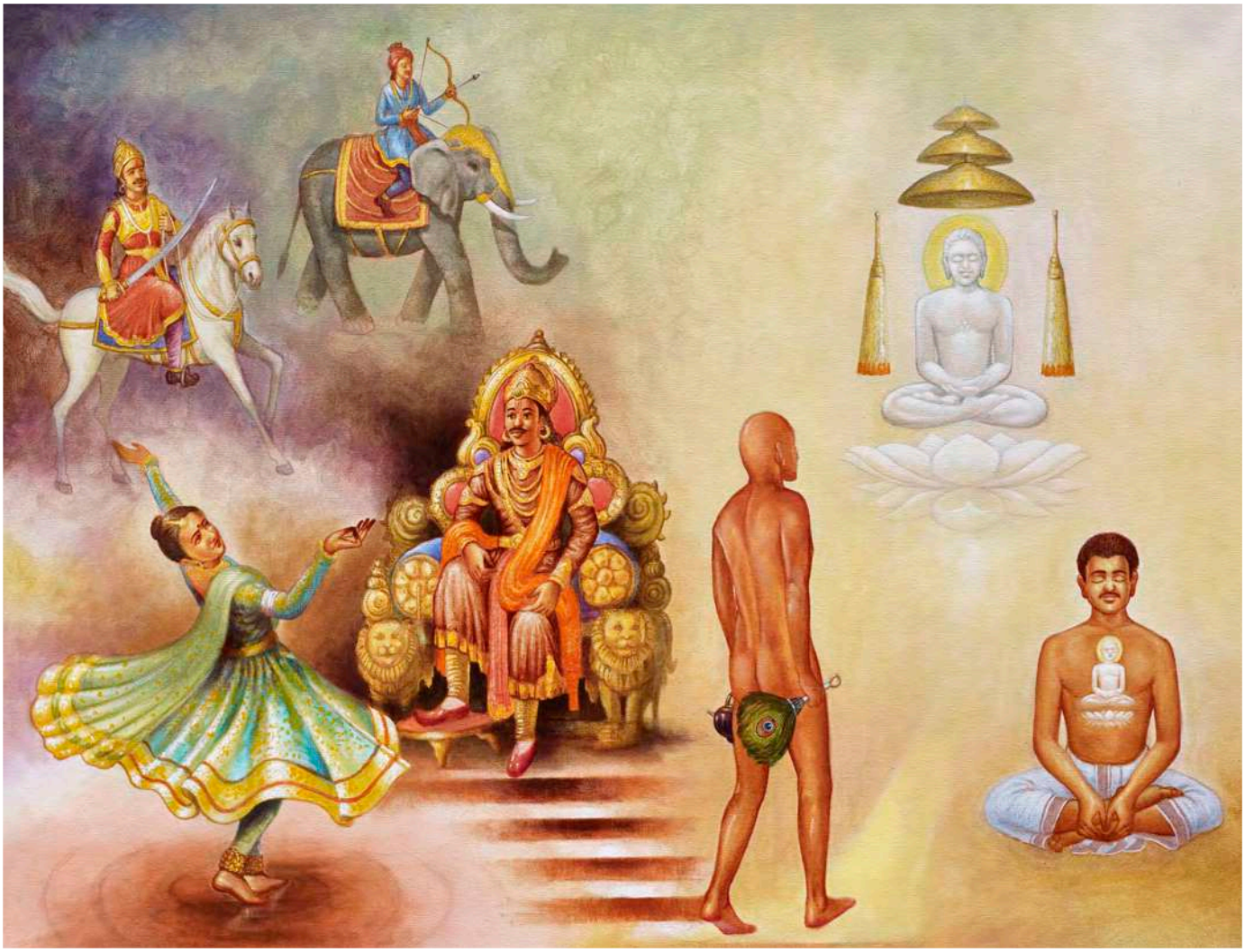

36” x 24” | Acrylic on Canvas

दर्शन-ज्ञान स्वभावी जिसने, सब विकार ही वमन किये।
परम ध्यान गोचर परमातम, परम देव मम हृदय रहे ।।१३।।

जो दर्शन-ज्ञान स्वभावी है, जिसने सभी विषय- विकारों/विकृतिओं को नष्ट कर दिया है, जो उत्कृष्ट ध्यान में ही उपलब्ध होता है, वह परमात्मा परमदेव मेरे मन में वास करे। (१३)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

जो भव दुःख का विध्वंसक है, विश्व विलोकी जिसका ज्ञान।
योगी जन के ध्यान गम्य वह, बसे हृदय में देव महान ।।१४।।

जो संसार के सभी संतापों को नष्ट कर देता है, जिसका ज्ञान समस्त विश्व को जाननेवाला है, योगीजन जिसे ध्यान द्वारा उपलब्ध करते हैं, वह महान देव मेरे मन में स्थित रहे। (१४)

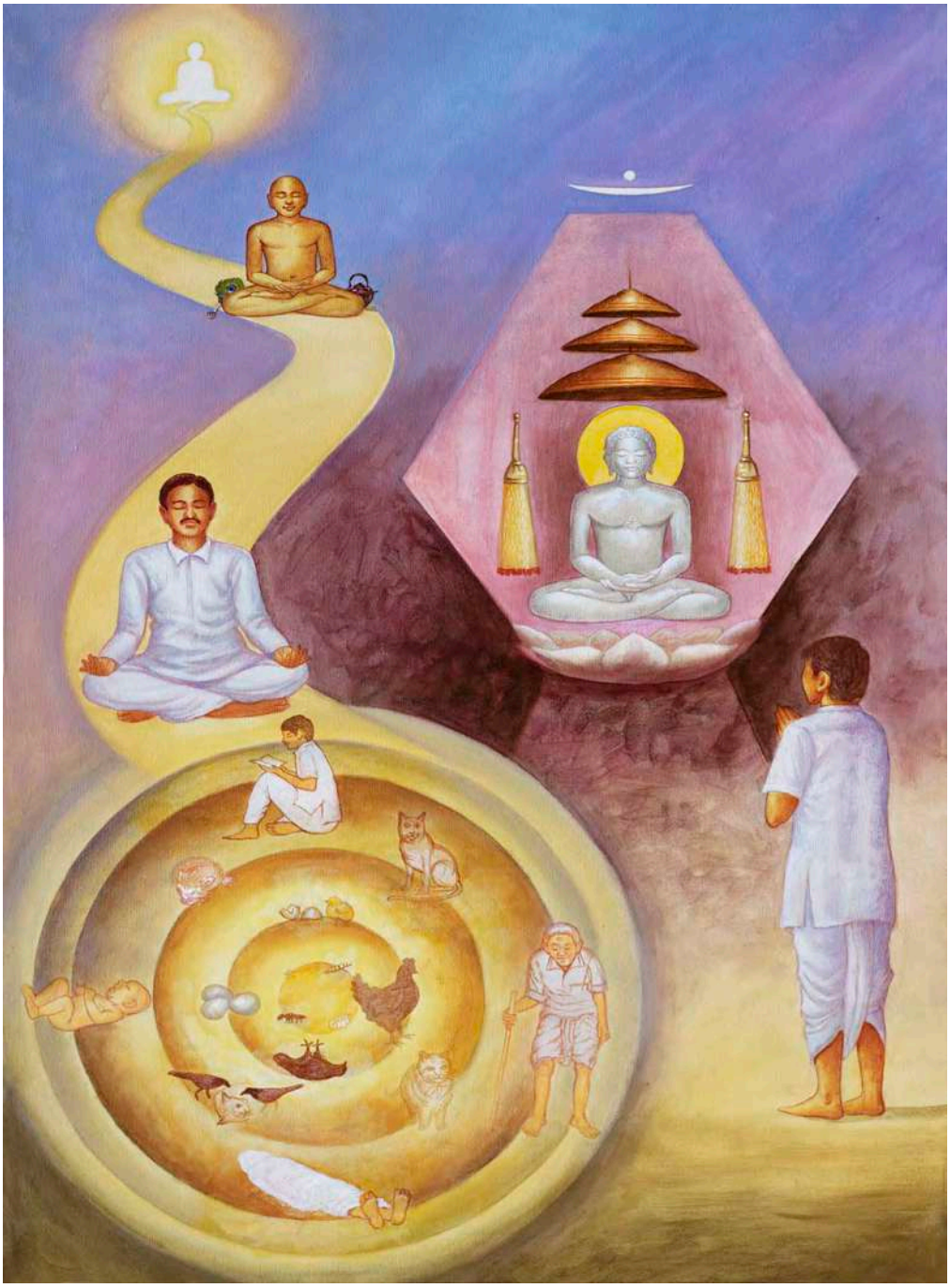

24" x 36" | Acrylic on Canvas

मुक्ति-मार्ग का दिग्दर्शक है, जन्म-मरण से परम अतीत।
निष्कलंक त्रैलोक्य-दर्शी वह, देव रहे मम हृदय समीप।।१५।।
निखिल-विश्व के वशीकरण वे, राग रहे न द्वेष रहे।
शुद्ध अतीन्द्रिय ज्ञानस्वरूपी, परम देव मम हृदय रहे।।१६।।

जो मुक्ति के मार्ग को/समस्त बन्धनों, पराधीनताओं से मुक्त हो स्वतन्त्र, स्वाधीन, परम सुखी होने के मार्ग को बताता है; जन्म-मरण से पूर्णतया रहित है, समस्त कर्म कलंक से रहित और तीनकाल तीनलोकवर्ती सम्पूर्ण पदार्थों को देखनेवाला हैं, वह देव मेरे मन के निकट रहे अर्थात् मेरा मन सदा उसमें ही स्थिर रहे। (१५)
समस्त विश्व के प्राणी जिनके अधीन हैं ऐसे, व राग-द्वेष जिसमें नहीं है; जो शुद्ध, इन्द्रियातीत और ज्ञान स्वरुपी है, वह परमदेव मेरे हृदय में वास करे। (१६)

24” x 36” | Acrylic on Canvas

देख रहा जो निखिल विश्व को, कर्म कलंक विहीन विचित्र।
स्वच्छ विनिर्मल निर्विकार वह, देव करे मम हृदय पवित्र ।।१७।।

जो सम्पूर्ण विश्व को देख रहा है, कर्मकलंक से पूर्णतया रहित है, विचित्र/आश्चर्यकारी अद्भुत स्वभाव वाला है, स्वच्छ है, विशिष्ट निर्मल है, समस्त विकारों से पूर्णतया रहित है, वह देव मेरे मन को भी पवित्र करे। (१७)

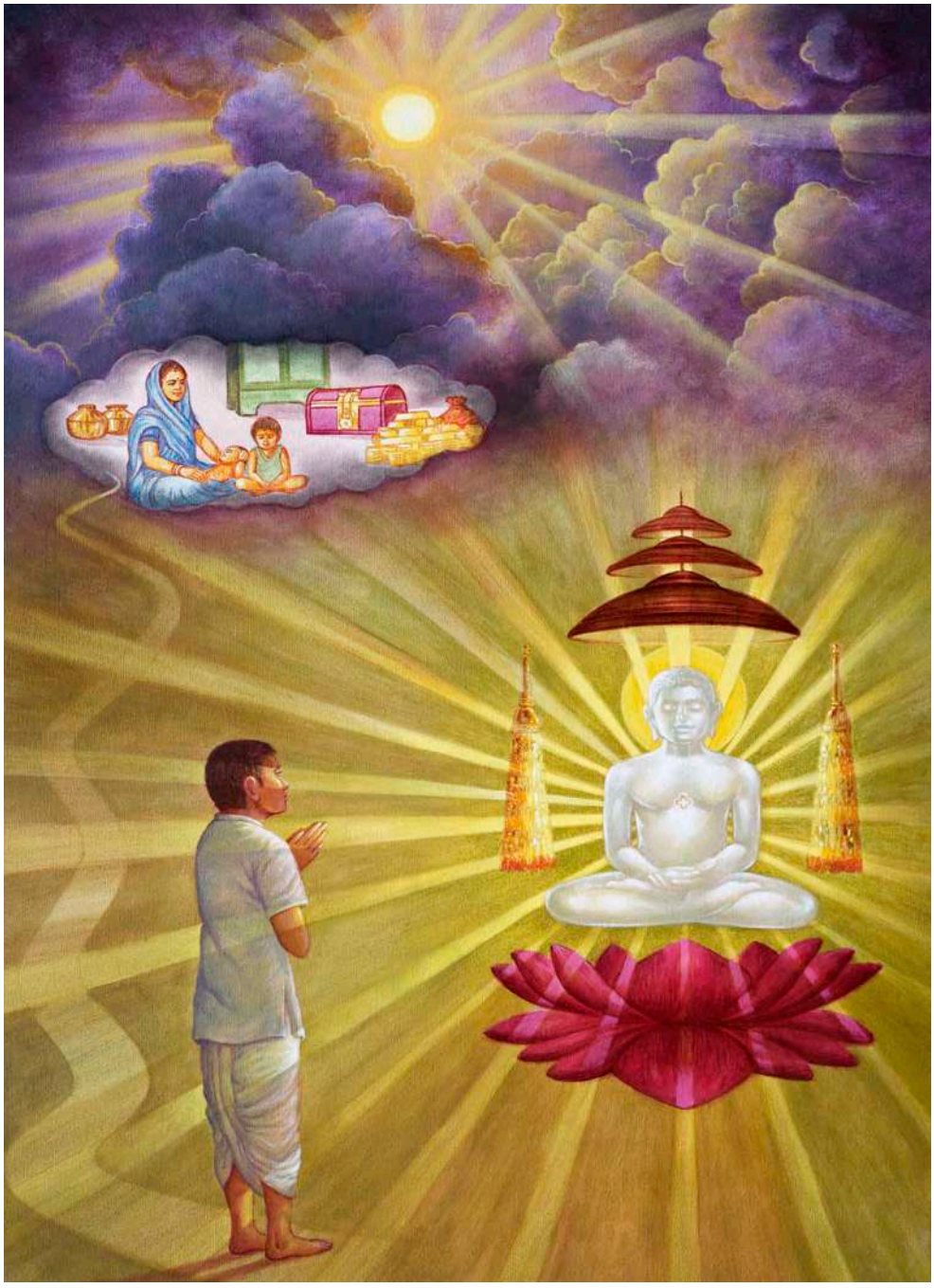

36” x 24” | Acrylic on Canvas

कर्म कलंक अछूत न जिसका, कभी छू सके दिव्य प्रकाश।
मोह-तिमिर को भेद चला जो, परम शरण मुझको वह आप्त ।।१८।।

कर्मकलंक जिसका कभी स्पर्श भी नहीं कर सकता है, वास्तव में तो यह दिव्य प्रकाश भी जिसका स्पर्श नहीं कर सकता है/जो पर्यायमात्र से अप्रभावित है, जिसने मोह रूपी अन्धकार का पूर्णतया भेदन कर दिया है, वह देव ही मुझे परमशरणभूत है। (१८)

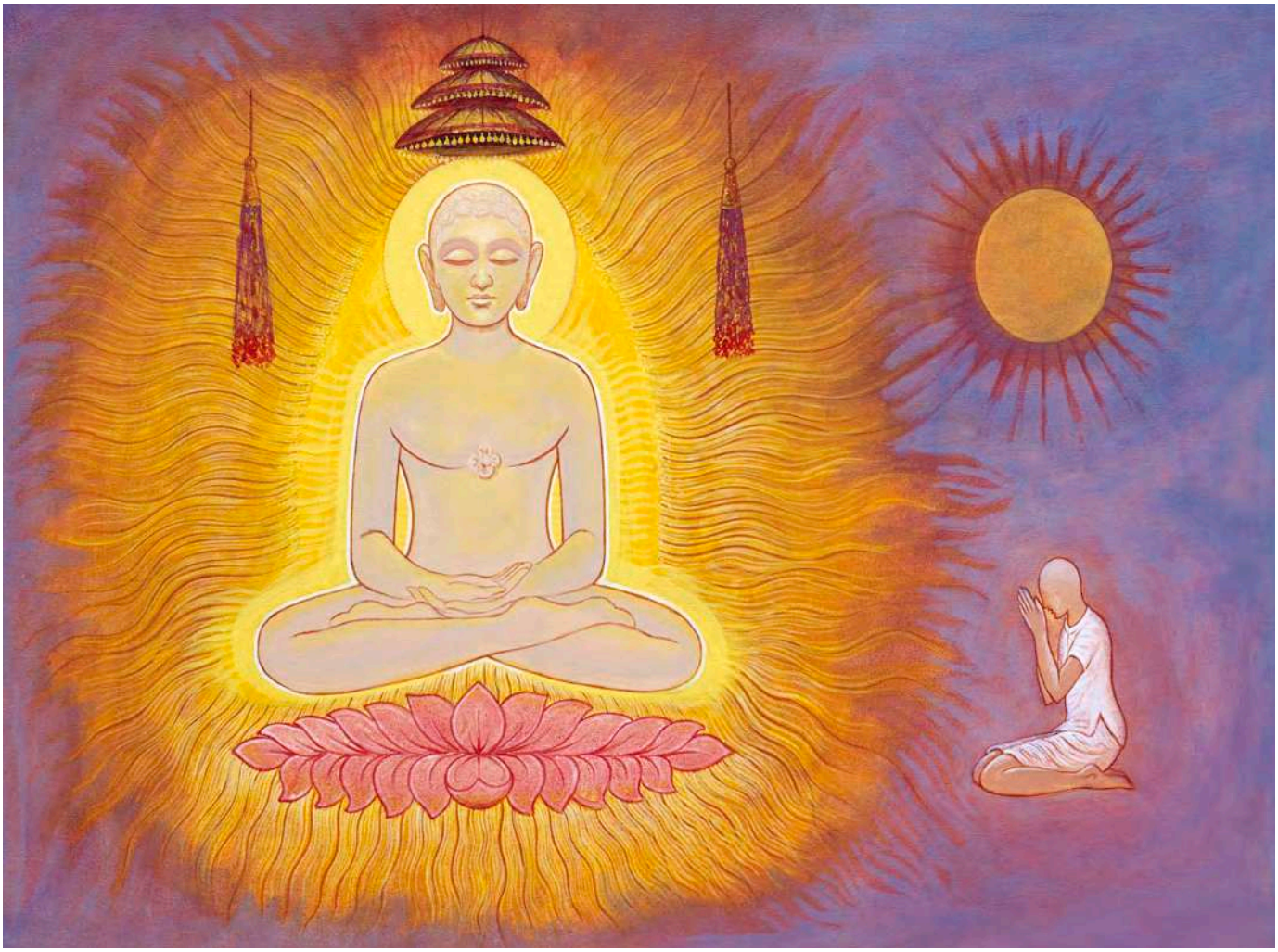

30” x 24” | Acrylic on Canvas

जिसकी दिव्य ज्योति के आगे, फीका पडता सूर्य प्रकाश।
स्वयं ज्ञानमय स्व-पर प्रकाशी, परम शरण मुझको वह आप्त ।।१९।।

जिसकी केवलज्ञानमयी दिव्यज्योति के समक्ष सूर्य का प्रकाश भी तेज-हीन दिखाई देता है, जो स्वयं ज्ञानमय है, स्व-पर प्रकाशक है, वह देव ही मुझे परम शरणभूत है। (१९)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

जिसके ज्ञान रुप दर्पण में, स्पष्ट झलकते सभी पदार्थ।
आदि अन्त से रहित शान्त शिव, परम शरण मुझको वह आप्त ।।२०।।

जिसके ज्ञानरूपी दर्पण में सभी पदार्थ अत्यन्त स्पष्ट रूप से झलक रहे हैं, आदि-अन्त से रहित शाश्वत है, शान्त है, शिव/कल्याण स्वरूप है, वह देव ही मुझे परम शरणभूत है। (२०)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

जैसे अग्नि जलाती तरु को, तैसे नष्ट हुए स्वयमेव।
भय-विषाद-चिन्ता सब जिसके, परम शरण मुझको वह देव ।।२१।।

जैसे अग्नि सहज ही वृक्ष को जला डालती है; उसीप्रकार जिसके भय, विषाद, चिन्ता आदि सभी विकार स्वयं ही नष्ट हो गए हैं, वह देव ही मुझे परम शरणभूत है। (२१)

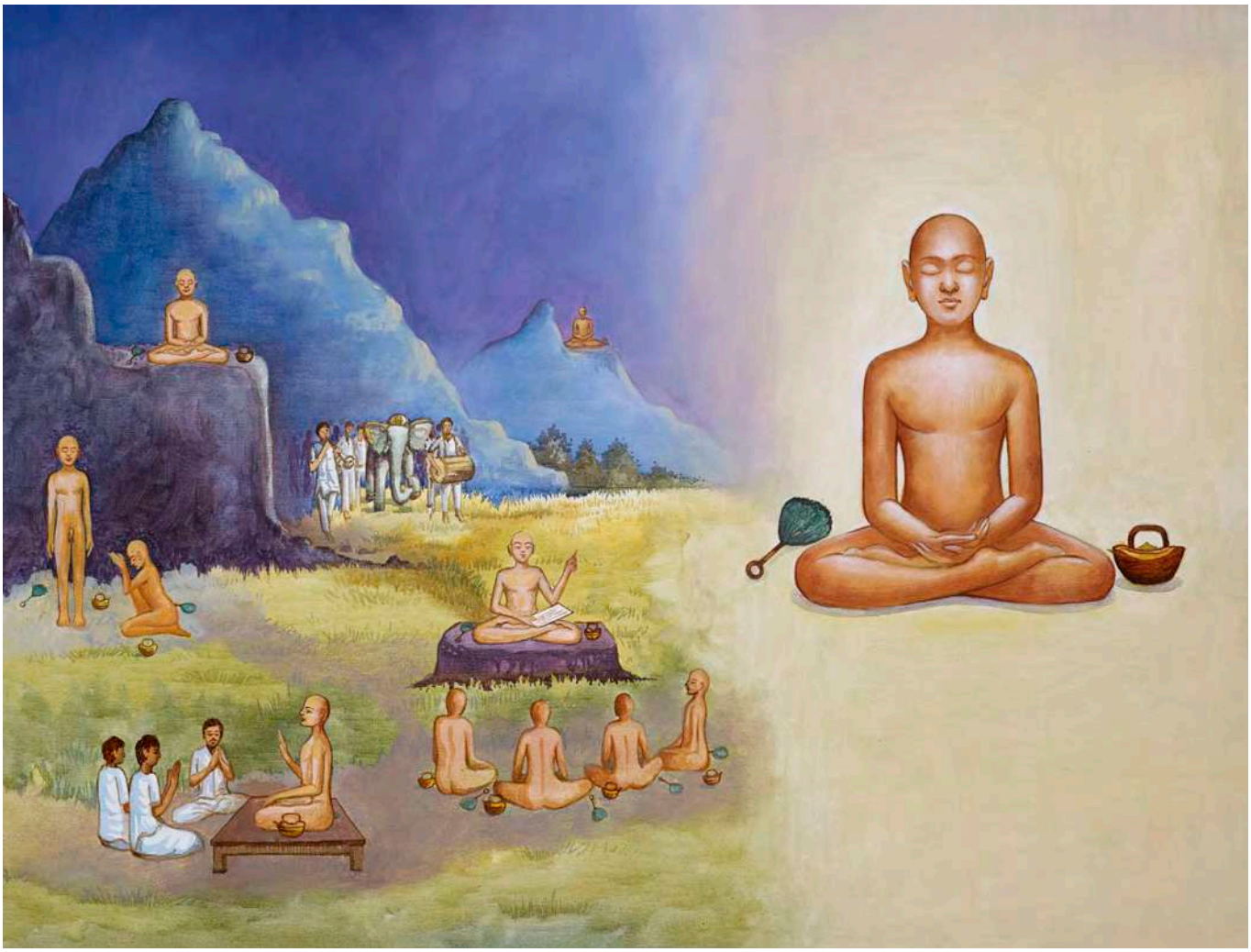

36” x 24” | Acrylic on Canvas

तृण, चौकी, शिल, शैल शिखर नहीं, आत्मसमाधि के आसन।
संस्तर, पूजा, संघ-सम्मिलन, नहीं समाधि के साधन ।।२२।।

तृण/घास का आसन, चौकी, शिला, पर्वत की चोटी आदि आत्मा में समाधि/स्थिरता के आसन नहीं है। इसीप्रकार संस्तर/संथारा, पूजा- प्रतिष्ठा, संघ का सम्मेलन अथवा योग्य संघ का समागम प्राप्त हो जाना, समाधि/आत्म-स्थिरता के साधन नहीं हैं। (२२)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

इष्ट-वियोग, अनिष्ट-योग में, विश्व मनाता है मातम।
हेय सभी है विषय वासना, उपादेय निर्मल आतम ।।२३।।

प्रिय पदार्थों के बिछुड़ जाने और अप्रिय पदार्थों का संयोग हो जाने पर संसारी प्राणी दुःख-शोक आदि करता है; परन्तु वास्तव में तो सभी विषय-वासना/किसी भी पदार्थ के प्रति किसी भी प्रकार की आसक्ति/समस्त परलक्षी परिणाम हेय/छोड़ने-योग्य ही हैं। एकमात्र अपना निर्मल आत्मा ही उपादेय अर्थात् आश्रय लेने -योग्य है। (२३)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

बाह्य जगत कुछ भी नहीं मेरा, और न बाह्य जगत का मैं।
यह निश्चय कर छोड़ बाह्य को, मुक्ति हेतु नित स्वस्थ रमें।।२४।।
अपनी निधि तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास।
जग का सुख तो मृग तृष्णा है, झूठे हैं उसके पुरुषार्थ।।२५।।

बाह्य जगत /जगत में रहनेवाले परपदार्थ मेरे कुछ भी नहीं लगते, मैं भी इन परपदार्थों का कुछ भी नहीं लगता; इनका मुझसे और मेरा इनसे कुछ भी संबंध नहीं है – इस सत्य तथ्य को दृढ़ता पूर्वक स्वीकार करके मैं सम्पूर्ण पर पदार्थों का लक्ष्य छोड़कर, मुक्ति के लिए सदा अपने में ही स्थिर होता हूँ। आत्म-रमण करता हूँ। (२४)
अपना सम्पूर्ण वैभव तो अपने में ही है, बाह्य पदार्थों में उसे पाने का प्रयास करना निरर्थक है। जग के इन पर पदार्थों को सुखमय तथा सुख के कारण मानना तो मृग-मरीचिका के समान भ्रम है; अतः इनके लिए किया गया पुरुषार्थ भी मिथ्या है। (२५)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

अक्षय है शाश्वत है आत्मा, निर्मल ज्ञान स्वभावी है।
जो कुछ बाहर है, सब पर है, कर्माधीन विनाशी है।।२६।।

आत्मा अक्षय/अविनाशी, शाश्वत/अनादि-अनन्त स्थाई, निर्मल और ज्ञानस्वभावी है। इसके अतिरिक्त जो भी है वह सभी इससे भिन्न, पर है, कर्माधीन और नाशवान है। (२६)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

तन से जिसका ऐक्य नहीं हो, सुत-तिय-मित्रों से कैसे।
चर्म दूर होने पर तन से, रोम समूह रहें कैसे।।२७।।

जैसे शरीर से चमड़ी पृथक हो जाने पर, शरीर में रोम-समूह कैसे रह सकता है? उसीप्रकार जिसका शरीर के साथ भी एकत्व नहीं है, उस आत्मा का एकत्व पुत्र, पत्नी, मित्र आदि के साथ कैसे हो सकता है? (२७)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

**महाकष्ट पाता जो करता, पर पदार्थ जड़ देह संयोग।**
**मोक्ष महल का पथ है सीधा, जड़ चेतन का पूर्ण वियोग।।२८।।**

जो जीव जड़ शरीर आदि परपदार्थों के साथ संयोग करता है, उन्हें अपना मानता है, वह अनन्त दुःख को प्राप्त करता है। मोक्षरूपी महल को प्राप्त करने का उपाय तो जड़ शरीर आदि और चेतन आत्मा के पूर्णतया पृथक्-पृथक् होने रूप अत्यन्त सीधा, सरल, सुगम है। (२८)

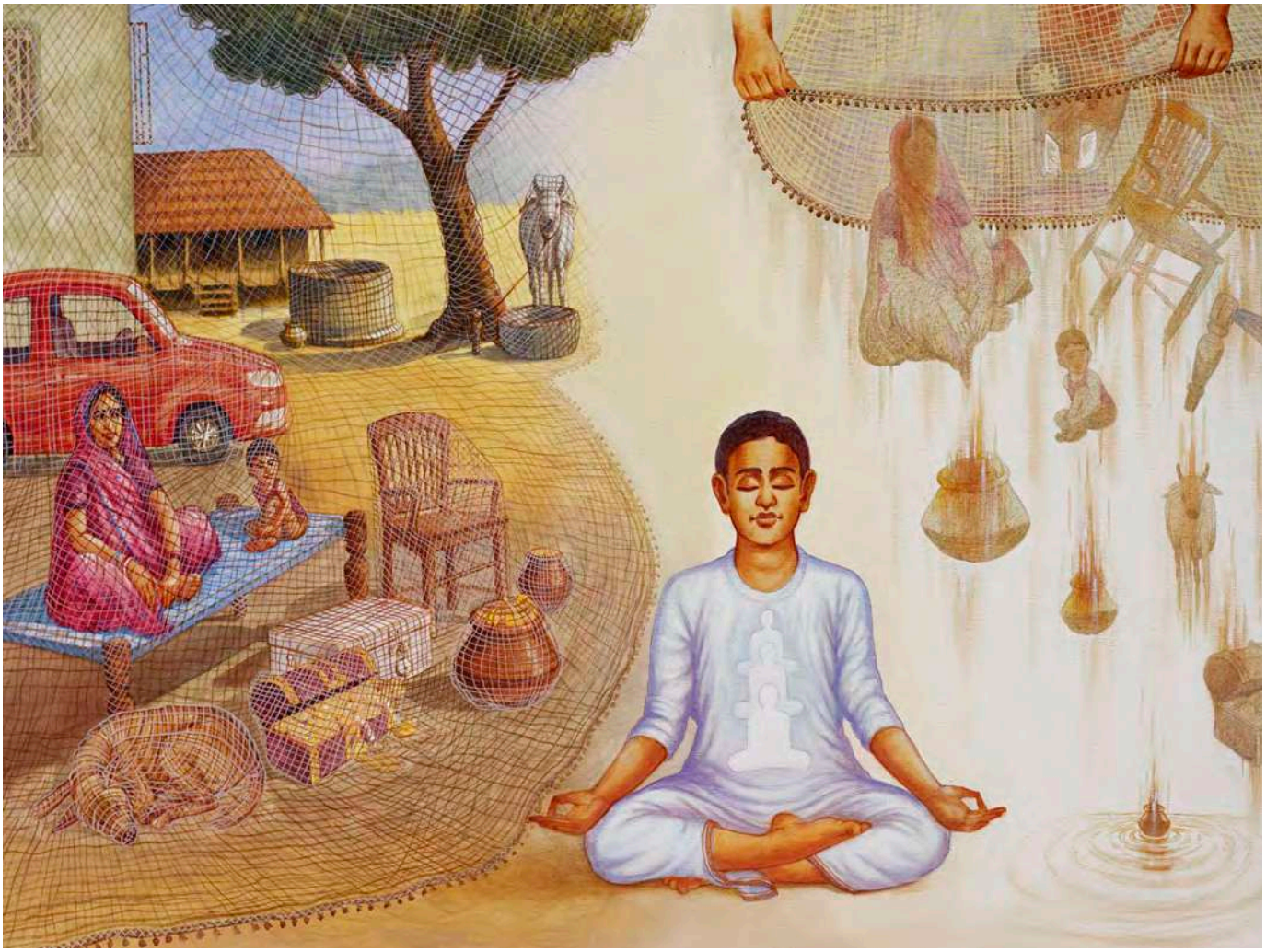

36” x 24” | Acrylic on Canvas

**जो संसार पतन के कारण, उन विकल्प-जालों को छोड़।**
**निर्विकल्प, निर्द्वन्द्व आतमा, फिर-फिर लीन उसी में हो।।२९।।**

हे आत्मन! यदि सुखी होना चाहते हो तो संसार-सागर में गिरानेवाले सम्पूर्ण विकल्प-समूहों को छोडक़र; समस्त संकल्प-विकल्पों से रहित निर्विकल्प, संसार के जंजाल से रहित निर्द्वन्द्व आत्मा में पुनःपुनः स्थिर हो जाओ। (२९)

36” x 24” | Acrylic on Canvas

स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करें आप, फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।।३०।।
अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
पर देता है यह विचार तज, स्थिर हो छोड़ प्रमादी बुद्धि।।३१।।

जीव ने जो भी शुभ या अशुभ कर्म स्वयं किए हैं; वे नियम से अपना फल देते हैं। कार्य स्वयं करे और फल अन्य के अधीन हो तो अपने द्वारा किए गए कर्म व्यर्थ हो जाएंगे, संसार में पुरुषार्थ करने का भी कोई महत्त्व नहीं रह जाएगा। (३०)
जीव को अपने कर्मों के सिवाय अन्य कोई भी फल नहीं देता है; इसलिए कोई दूसरा, मुझे कुछ दे सकता है – यह विचार छोडक़र, प्रमादी बुद्धि नष्टकर, आत्मकल्याणकारी कार्यों में जागृत रहते हुए आत्मा में स्थिर हो जाओ। (३१)

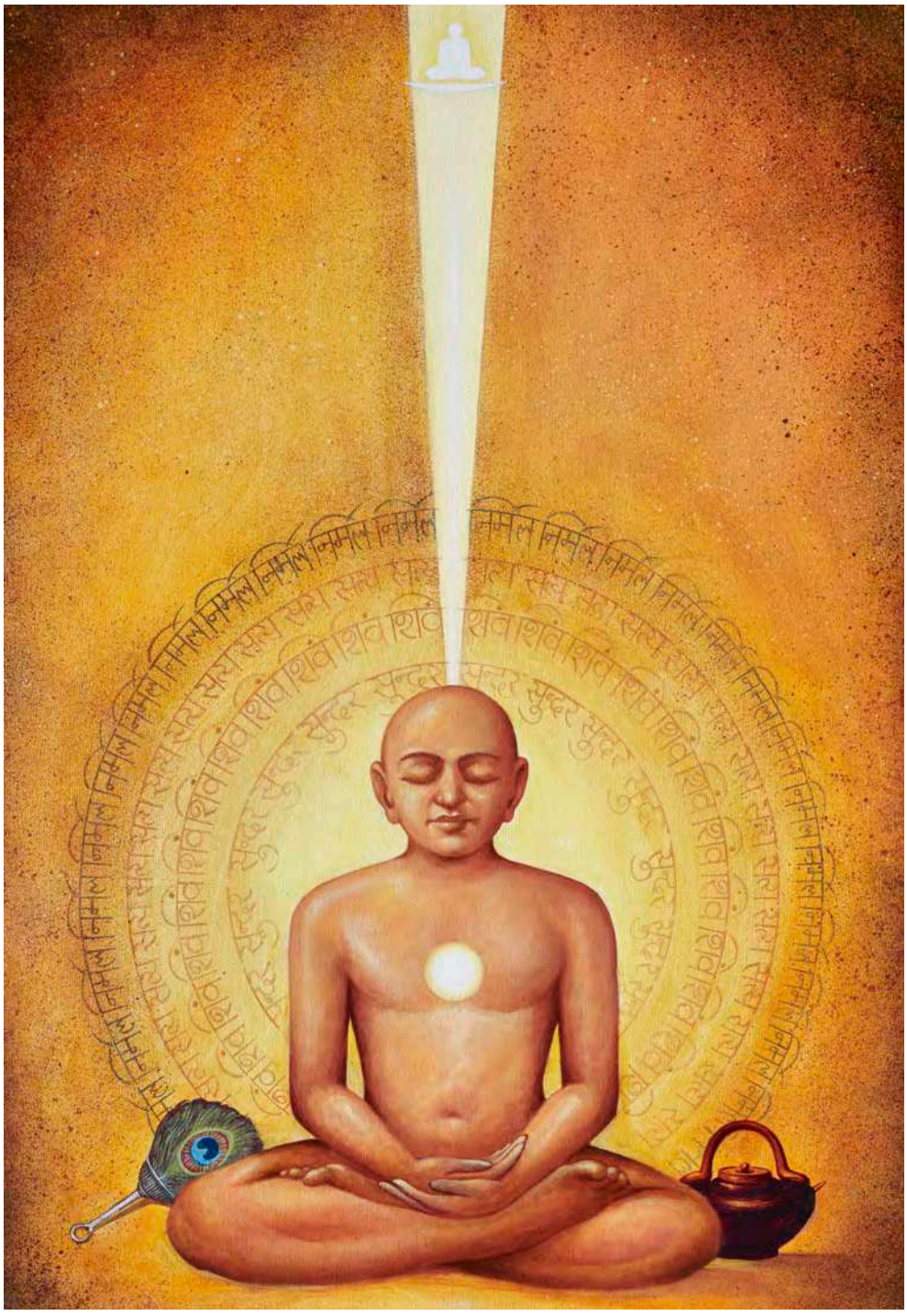

24” x 36” | Acrylic on Canvas

निर्मल, सत्य, शिवं, सुन्दर है, ‘अमितगति’वह देव महान।
शाश्वत निज में अनुभव करते, पाते निर्मल पद निर्वाण ।।३२।।

अमितगति आचार्य कहते हैं कि आश्चर्यकारी अनन्त वैभव सम्पन्न वह महान देव निर्मल, सत्य/वास्तविक, शिव/कल्याणमय, सुन्दर/मनोहारी शाश्वत है। जो इसका सदैव अपने में ही अनुभव करते हैं, वे पवित्रतम पद निर्वाण अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करते हैं। (३२)

# अमितगति आचार्य रचित
# भावना द्वात्रिंशतिका

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव! ।।१।।

शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ।।२।।

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भुवने वने वा ।
निराकृताशेषममत्वबुद्धेः, समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ।।३।।

मुनीश! लीनाविव कीलिताविव, स्थिरौ निषातविव बिम्बिताविव ।
पादौत्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा, तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव ।।४।।

एकेन्द्रियाद्या यदि देव देहिनः, प्रमादतः संचरता इतस्ततः ।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीडिता, तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ।।५।।

विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना, मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।
चारित्रशुद्धेर्यदकाहरि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ।।६।।

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ।।७।।

अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्म्मणः ।
व्यधादनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ।।८।।

क्षति मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलंघनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषुं वर्तनं, वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ।।९।।

यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं, मया प्रमादाद्यदि किंञ्चनोक्तम् ।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी, सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ।।१०।।

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः, स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः ।
चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने, त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवि ।।११।।

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दै-र्यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१२।।

यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः, समस्तसंसार विकारबाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१३।।

निषूदते यो भवदुःखजालं, निरीक्षते यो जगदन्तरालं ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१४।।

विमुक्तितमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्यतीतः ।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१५।।

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा, रागादयो यस्य न सन्ति दोषा : ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१६।।

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ।।१७।।

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषै-र्यो ध्वान्तसंधैरिव तिग्मरश्मिः ।
निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।।१८।।

विभासते यत्र मरीचिमालिः, न विद्यमाने भुवनावभासि ।
स्वात्मस्थितं बोधमय प्रकाशं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।।१९।।

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तिम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ।।२०।।

येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा, विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपञ्च-स्तं देवमाप्तं शरण प्रपद्ये ।।२१।।

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः ।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ।।२२।।

न संस्तरो भद्र! समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं, विमुच्य सर्व्वामपि बाह्यवासनाम् ।।२३।।

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था, भवामि तेषां न कदाचनाहम् ।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यां, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र! मुक्त्यै ।।२४।।

आत्मानमात्मन्यवलोक्यमान, स्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् ।।२५।।

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मलः साधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ता, न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ।।२६।।

यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्द्धं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः।
पृथक् कृते चर्मणि रोमकूपाः, कुंतो तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ।।२७।।

संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो, पिपासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ।। २८।।

सर्व निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ।।२९ ।।

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ।।३०।।

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोऽपि कस्यापि ददाति किंचन ।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः, परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् ।।३१।।

यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्व विविक्तो भृशमनवद्यः ।
शाश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ।।३२।।

# चित्रकार परिचय

अरबिंदा सामंता

अरबिंदा सामंता भारतीय आधुनिक कला के एक उत्कृष्ट कलाकार हैं। इनका जन्म १९७४ में पश्चिम बंगाल के हावड़ा के गांव गरबालिया में हुआ था। इन्होंने कोलकाता के 'गवर्नमेंट कालेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट' से चित्रकला विषय में 'बैचलर ऑफ फाइन आर्ट' की डिग्री प्राप्त की। चित्रकला में अपना बी.एफ.ए पूरा करने के बाद अरबिंदा कोलकाता से मुंबई में स्थानांतरित हो गए, इनका पहला शो शीर्षक 'एटरनल लव' मुंबई की जहांगीर आर्ट गैलरी में आयोजित किया गया था।

सन् २००० के बाद से अरबिंदा ने कई देशों में जाकर अनेकों एकल और समूहिक शो किए हैं। जिनमें मुंबई में जहांगीर आर्ट गैलरी, नेहरू सेंटर आर्ट गैलरी, आर्टिस्ट सेंटर आर्ट गैलरी, बजाज आर्ट गैलरी, सिमरोजा गैलरी आदि दिल्ली में लोकायता आर्ट गैलरी, आर्ट मॉल गैलरी, यश गैलरी, कर्नाटक चित्रकला परिषद, बैंगलोर में महुआ आर्ट गैलरी, चेन्नई में फोकस आर्ट गैलरी, लंदन में नेहरू सेंटर आर्ट गैलरी मुख्य हैं।

उन्होंने सामाजिक सहयोग के लिए भी कई शो में हिस्सा लिया है। जिनमें क्राई फाउंडेशन, मुंबई (२०१७) द्वारा आयोजित 'कम शेयर माई वर्ल्ड', २०११ में कैंसर पेशेंट एड एसोसिएशन, मुंबई द्वारा आयोजित 'कलर्स ऑफ लाइफ', २०१४ में मुंबई में आयोजित 'शो फॉर चैरिटी'। २०१६, २०१७, २०१८ में दिल्ली और मुंबई में आयोजित 'एडलवाइस पैलेट आर्ट शो' और २०१९ में चेन्नई द्वारा आयोजित 'वैल्यू फॉर मनी' आदि। जर्मनी के मेयर द्वारा सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम और प्रदर्शनी 'विथ (ही) आर्ट अगेंस्ट एफ जी एम' डॉर्टमुंड जर्मनी में शामिल होने के लिए इन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था, अंत में अरबिंदा ने वहां निर्मित अपनी पेंटिंग जर्मनी के मेयर को सहयोग रुप में प्रदान की ।

अरबिंदा सामंता को १९९४-९५ में 'कला अकादमी' कोलकाता द्वारा, २०१३ में 'कलाअरोमा' नई दिल्ली द्वारा व २०१६ में 'कला स्पंदन फाउंदेशन' मुंबई द्वारा सम्मानित किया गया। इनके चित्रों को २००२ में मणिपुर के संग्रहालय और २०१४ में बेल्जियम संग्रहालय, इटली द्वारा एकत्र किया गया था। उन्होंने २००९, २०१७, २०१८ में कोलकाता के कलाकारों के समूह और कार्टिस्ट यात्रा द्वारा आयोजित मुंबई, जयपुर और कोलकाता में विभिन्न शिविरों में भाग लिया है। अरविंदा अभी वर्तमान में मुंबई में निवास एवं कार्य करते हैं।

अरबिंदा भारतीय पौराणिक कथाओं, ध्यान और आध्यात्मिक शक्ति की गहराई से प्रेरित हैं, इनका मानना है कि कला में अपनी ही अलग ध्यान शक्ति है और वह चित्रकारी इस विश्वास के साथ करते है कि उनकी कला से लोगों के जीवन में एक नई प्रेरणा, खुशियां व सकारात्मक उर्जा पैदा होगी। वह यह भी कहते हैं कि जब इन्होंने गुरु कहान कला संग्रहालय के लिए 'भावना बत्तीसी-सामायिक पाठ' की पेंटिंग बनाना शुरू किया तो इन्हे अत्यधिक आनन्द के साथ-साथ एक असीम शांति का अनुभव हुआ। यह इनके लिए एक महान आध्यात्मिक अनुभव है। वह वास्तव में 'श्री कुंदकुंद-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई' के आभारी हैं कि उन्होंने उन्हें इस अनुभव को महसूस करने का सुअवसर प्रदान किया।

## नमः श्रीसद्गुरवे ।

*अहो! देव-शास्त्र-गुरु मंगल हैं, उपकारी हैं।*

*हमें तो देव-शास्त्र-गुरु का दासत्व चाहिये।*

*पूज्य कहानगुरुदेव से तो मुक्ति का मार्ग मिला है।*

*उन्होनें चारों ओर से मुक्ति का मार्ग प्रकाशित किया है।*

*गुरुदेव का अपार उपकार है। वह उपकार कैसे भूला जाय?*

*गुरुदेव का द्रव्य तो अलौकिक है। उनका श्रुतज्ञान और वाणी आश्चर्यकारी है।*

*परम उपकारी गुरुदेव का द्रव्य मंगल है, उनकी अमृतमयी वाणी मंगल है।*

*वे मंगलमुर्ति हैं, भवोदधितारणहार हैं, महिमावन्त गुणों से भरपूर हैं।*

*पूज्य गुरुदेव के चरणकमल की भक्ति और उनका दासत्व निरन्तर हो।*

**–पूज्य बहिनश्री चंपाबेन**

आत्मसाधना का पुरुषार्थ जागृत करने वाले व
संसार के रस को घटाने वाले अपूर्व

# वचनामृत

वचनामृत प्रदाता परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

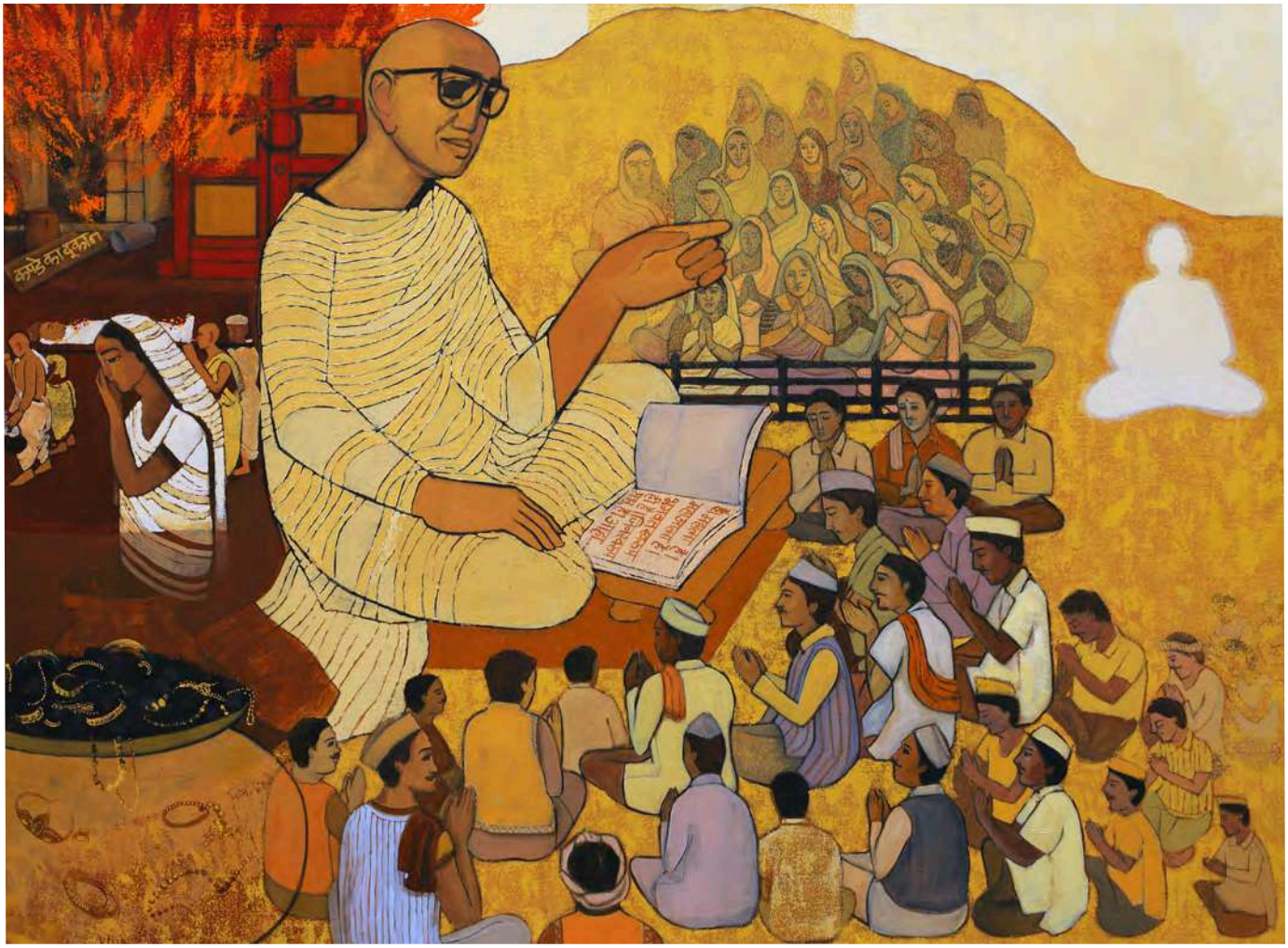

48” x 36” | Oil on Canvas (Vachanamrut -23)

पैसा रहना या नहीं रहना वह अपने हाथ की बात नहीं है। जब पुण्य पलटता है तब दुकान जल जाती है, बीमा कम्पनी टूट जाती है, पुत्री विधवा हो जाती है, गड़ा हुआ धन कोयला हो जाता है आदि सब सुविधाएँ एकसाथ पलट जाती है। कोई कहे कि ऐसा तो कभी-कभी होता है न? अरे! पुण्य पलटे तो सर्व प्रसंग पलटने में देर नहीं लगती। परद्रव्य को कैसे रहना वह तेरे हाथ की बात ही नहीं है न। इसलिये सदा-स्थायी सुखनिधान निज आत्मा की पहिचान करके उसमें स्थिर हो जा। (वचनामृत नं. २३)

48” x 35” | Acrylic on Canvas (Vachanamrut -61)

अपने पीछे विकराल शेर झपट्टे मारता हुआ दौडता आ रहा हो तो वहाँ कैसी दौड़ लगाता है? क्या वहाँ थकान उतारने के लिये खड़ा रहेगा? उसीप्रकार अरे! यह काल झपट्टे मारता हुआ चला आ रहा है और भीतर काम बहुत से करना हैं ऐसा अपने को अन्तर में लगना चाहिये। (वचनामृत नं. ६१)

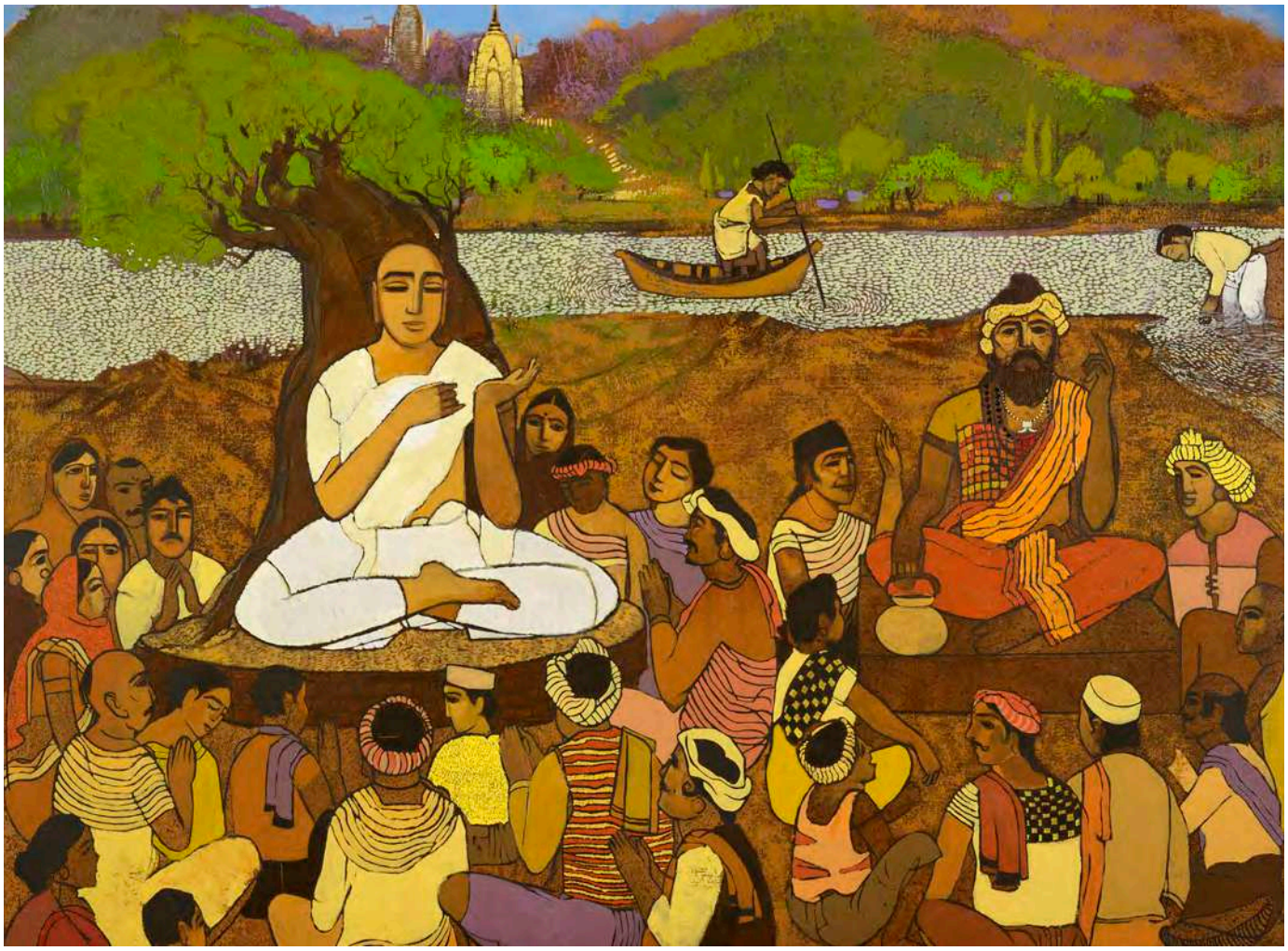

48” x 36” | Acrylic on Canvas (Vachanamrut -70)

तालाब की ऊपरी सतह बाहर से एक-सी लगती है, परन्तु भीतर उतरकर उसकी गहराई का माप करने पर किनारे और मध्य की गहराई में कितना अन्तर है वह ज्ञात होता है; उसीप्रकार ज्ञानी और अज्ञानी के वचन ऊपर-ऊपर से देखने में समान लगते हैं, किन्तु अन्तर का गम्भीर रहस्य देखने पर उनके आशय में कितना अन्तर है वह समझ में आता है। (वचनामृत नं. ७०)

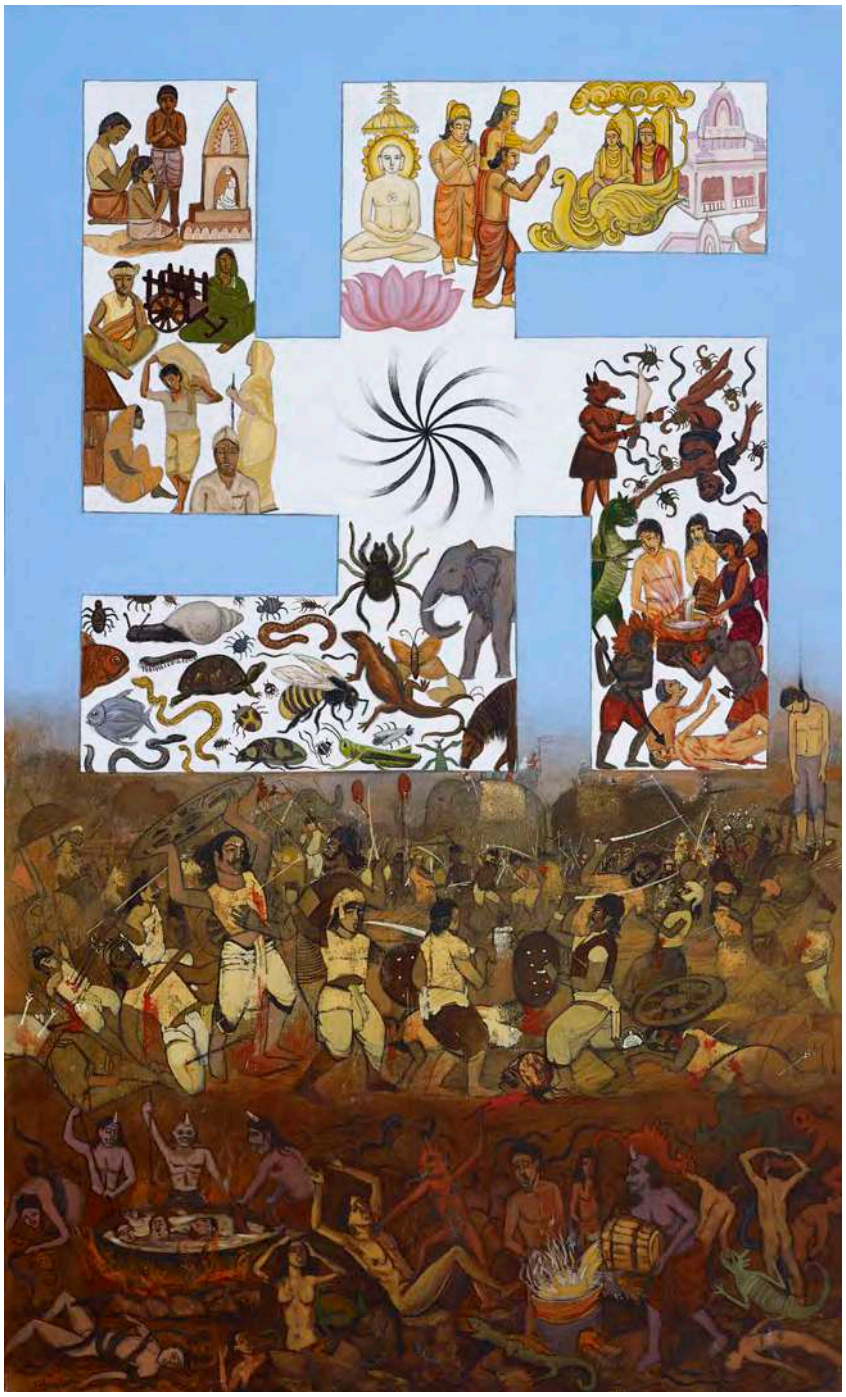

34” x 56” | Acrylic on Canvas (Vachanamrut -79)

देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरक-ये चारों गतियाँ सदा ही हैं, जीवों के परिणाम का फल हैं, कल्पित नहीं है। जिसे, अपनी सुविधा साधने में बीच में असुविधा करनेवाले कितने जीवों को मार डालना तथा कितने काल तक ऐसी क्रूरता करना उसकी कोई सीमा नहीं है उसे उन अतिशय क्रूर परिणामों के फलरुप जहाँ अपार दुःख भोगना पडता है उस स्थान का नाम नरक है। लाखों खून करनेवाले को लाख बार फाँसी मिले ऐसा तो इस लोक में नहीं होता। उसे अपने क्रूर भावों का जहाँ पूरा फल मिलता है उस अनन्त दुःख भोगने के क्षेत्र को नरक कहा जाता है। उस नरकगति के स्थान मध्यलोक के नीचे हैं और शाश्वत हैं। उसे युक्ति एवं न्याय से बराबर साबित किया जा सकता है। (वचनामृत नं. ७९)

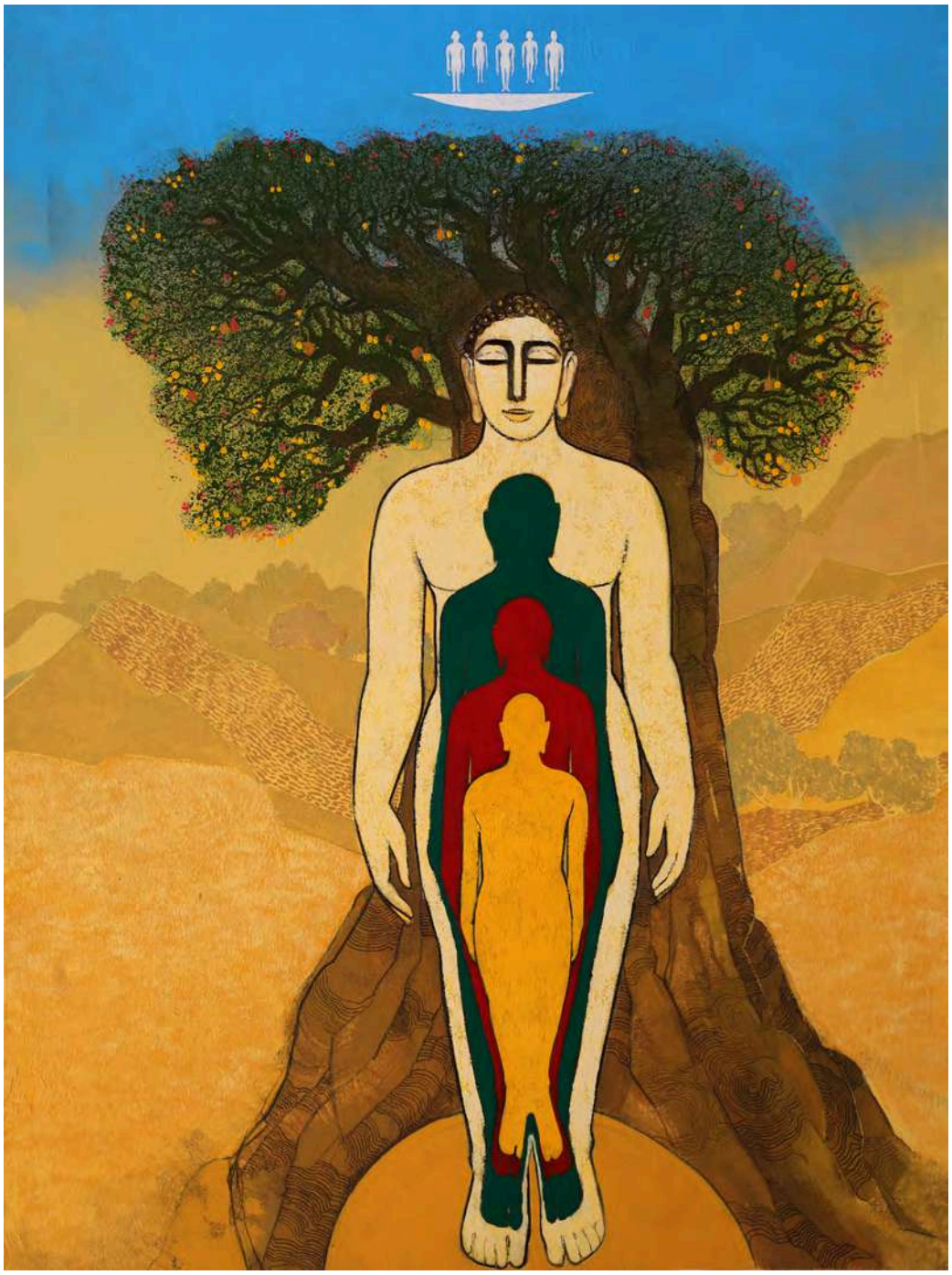

36” x 48” | Oil on Canvas (Vachanamrut -80)

यदि चैतन्यसामर्थ्य का विश्वास करे तो उसके आश्रय से रत्नत्रयधर्म की अनेक शाखाएँ-उपशाखाएँ प्रगट होकर मोक्षफल सहित विशाल वृक्ष उगे। भविष्य में होनेवाले मोक्षवृक्ष की शक्ति वर्तमान में ही तेरे चैतन्यबीज में विद्यमान है। सूक्ष्म दृष्टि से उसे विचार में लेकर अनुभव करने से तेरा अपूर्व कल्याण होगा। (वचनामृत नं. ८०)

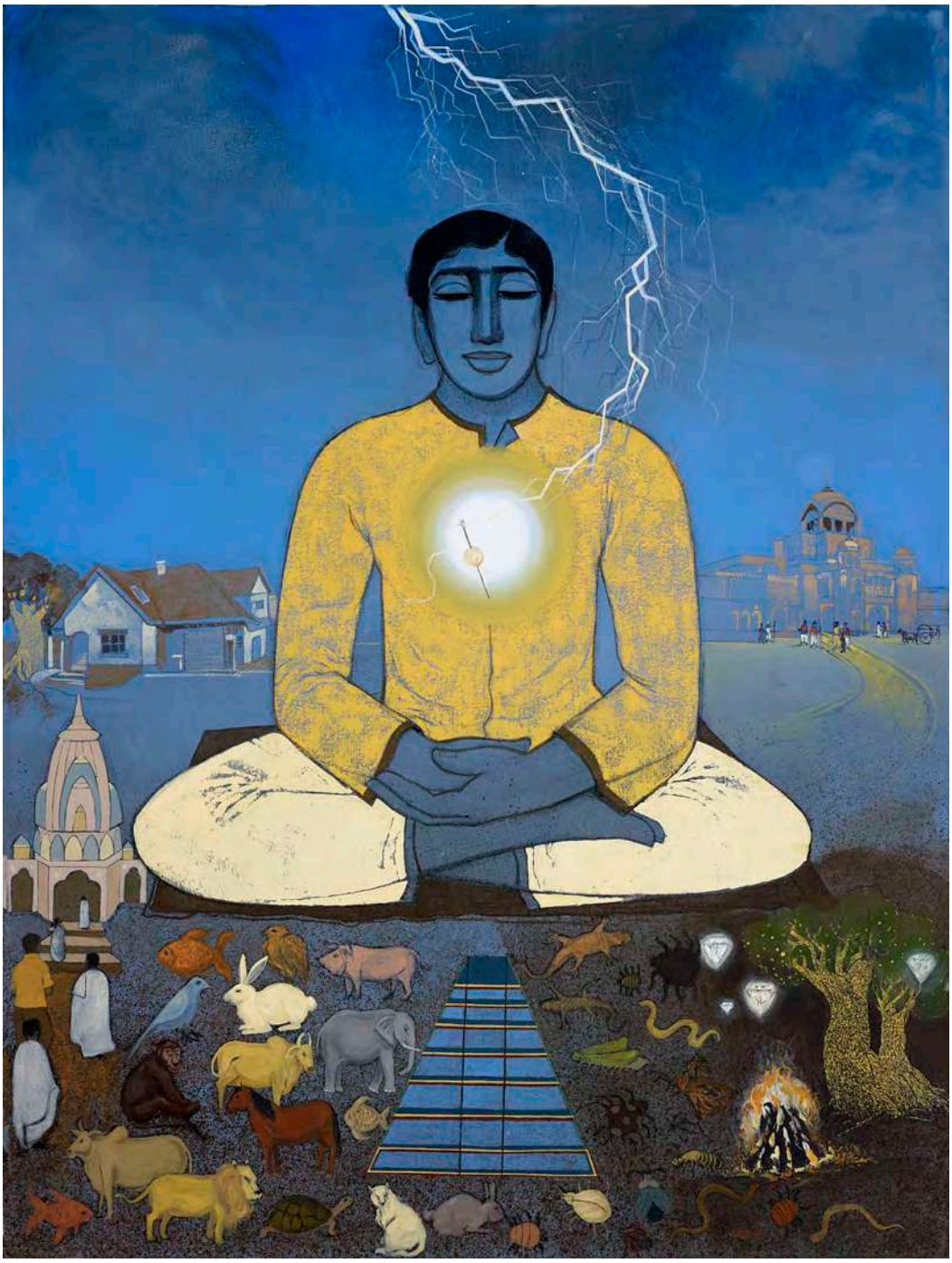

36” x 48” | Acrylic on Canvas (Vachanamrut -151

ऐसा उत्तम योग फिर कब मिलेगा? निगोद से निकलकर त्रसपना प्राप्त करना वह चिन्तामणि तुल्य दुर्लभ है, तो फिर मनुष्यपना प्राप्त करना, जैनधर्म का मिलना तो महा दुर्लभ है। धन-सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होना वह दुर्लभ नहीं है। ऐसा जो उत्तम योग मिला है वह अधिक काल तक नहीं रहेगा, इसलिये बिजली की चमक में मोती पिरो लेने जैसा है। ऐसा सुयोग फिर कब मिलेगा? इसलिये तू दुनिया के मान-सन्मान एवं धन-सम्पत्ति की महिमा छोडक़र, दुनिया क्या कहेगी उसका लक्ष छोडक़र, एक बार मिथ्यात्व को छोडऩे का जीतोड़ प्रयत्न कर। (वचनामृत नं. १५१)

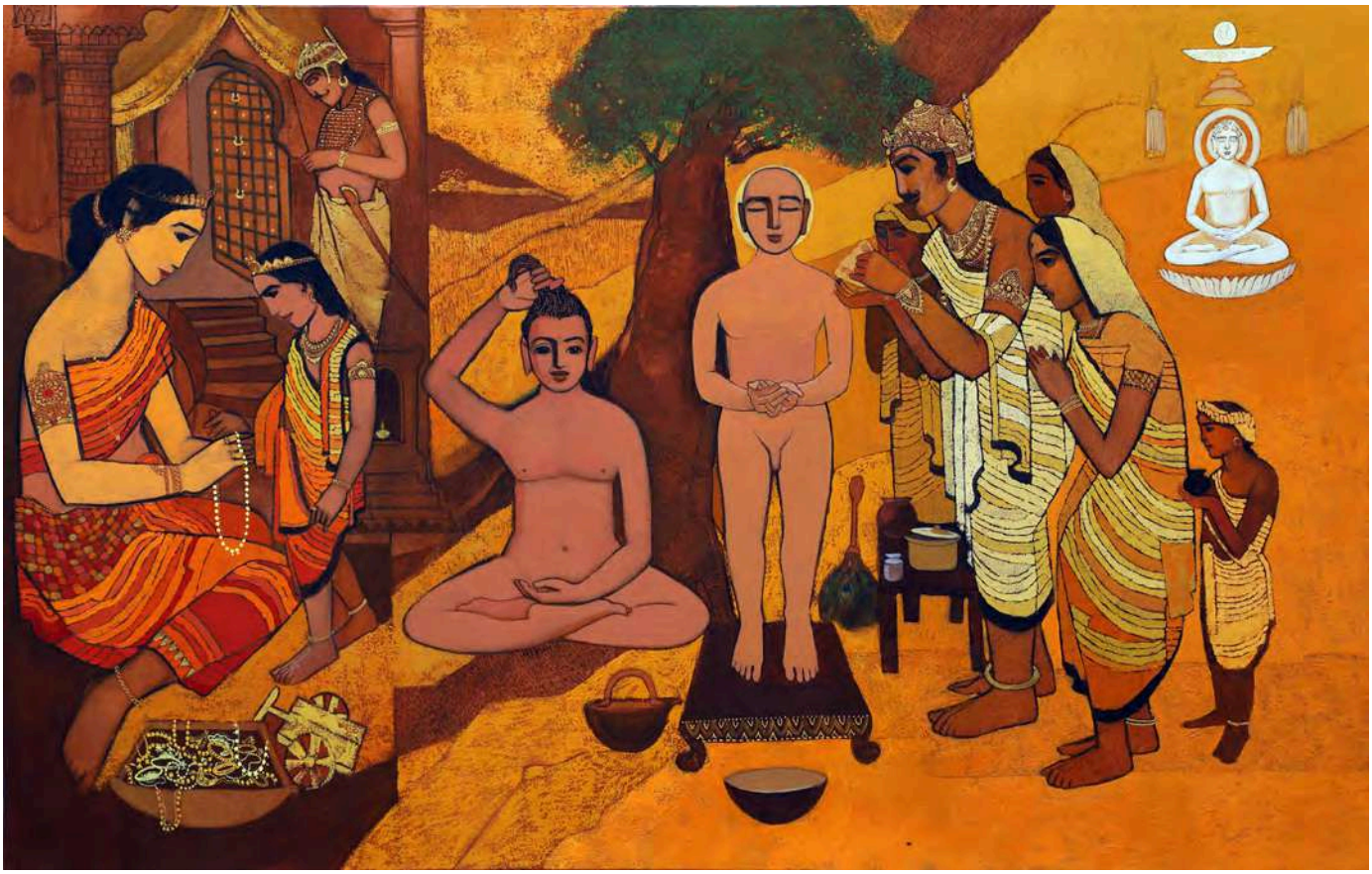

48” x 36” | Oil on Canvas (Vachanamrut -189)

अहा! आठ वर्ष का वह छोटा-सा राजकुमार जब दीक्षा लेकर मुनि हो तब वैराग्य का वह अद्भूत दृश्य! आनन्द में लीनता! मानों छोटे-से सिद्धभगवान ऊपर से उतरे हों! वाह रे वाह! धन्य वह मुनिदशा!
जब वे छोटे-से मुनिराज दो-तीन दिन में आहार के लिये निकलें तब आनन्द में झूलते-झूलते धीरे-धीरे चले आ रहे हों, योग्य विधि का मेल मिलने पर आहार ग्रहण के लिये छोटे-छोटे दो हाथों की अंजलि जोडक़र खड़े हों, अहा! वह दृश्य कैसा होगा। पीछे तो वे आठ वर्ष के मुनिराज आत्मा के ध्यान में लीन होकर केवलज्ञान प्रगट करके सिद्ध हो जायें। -ऐसी आत्मा की शक्ति है। वर्तमान में भी विदेहक्षेत्र में श्री सीमन्धरादि भगवान के पास आठ-आठ वर्ष के राजकुमारों की दीक्षा के ऐसे प्रसंग बनते हैं। (वचनामृत नं. १८९)

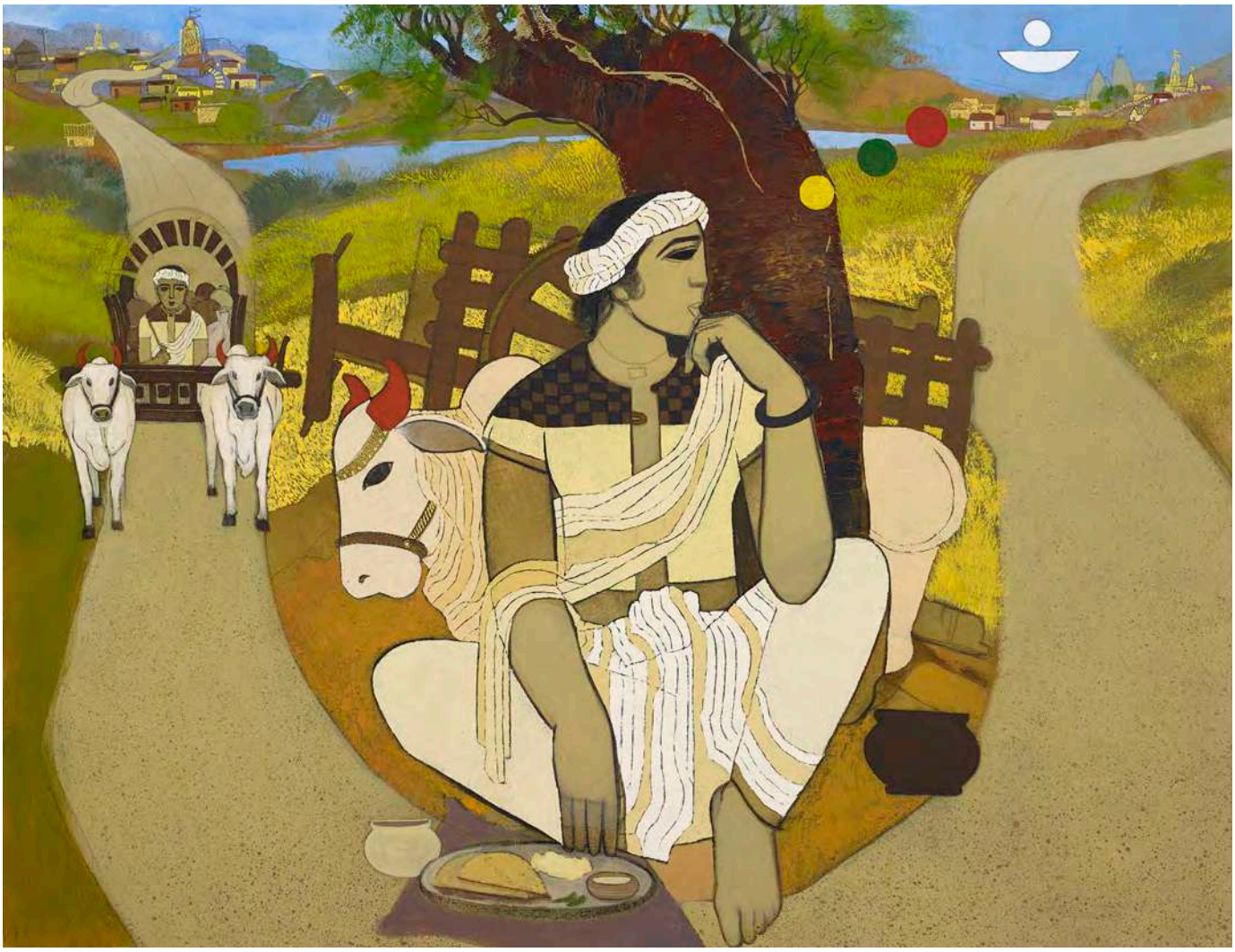

48” x 36” | Acrylic on Canvas (Vachanamrut -237)

अरे! एक गाँव से दूसरे गाँव जाना हो तब लोग रास्ते में खाने के लिये कलेवा साथ ले जाते हैं; तो फिर यह भव छोडक़र परलोक में जाने के लिये आत्मा की पहिचान का कुछ कलेवा लिया? आत्मा कहीं इस भव जितना नहीं है; यह भव पूर्ण करके पीछे भी आत्मा तो अनन्त काल अविनाशी रहनेवाला है; तो उस अनन्त काल तक उसे सुख मिले उसके लिये कुछ उपाय तो कर। ऐसा मनुष्यभव और सत्संग का ऐसा अवसर मिलना बहुत दुर्लभ है। आत्मा की परवाह किये बिना ऐसा अवसर चूक जायेगा तो भवभ्रमण के दुःख से तेरा छूटकारा कब होगा? अरे, तू तो चैतन्यराजा! तू स्वयं आनन्द का नाथ! भाई, तुझे ऐसे दुःख शोभा नहीं देते। जैसे अज्ञानवश राजा अपने को भूलकर घूरे में लोटे, उसीप्रकार तू अपने चैतन्य स्वरूप को भूलकर राग के घूरे में लोट रहा है, परन्तु वह तेरा पद नहीं है; तेरा पद तो चैतन्य से शोभित है, चैतन्यरत्नजडित तेरा पद है, उसमें राग नहीं है। ऐसे स्वरुप को जानने पर तुझे महा आनन्द होगा। (वचनामृत नं. २३७)

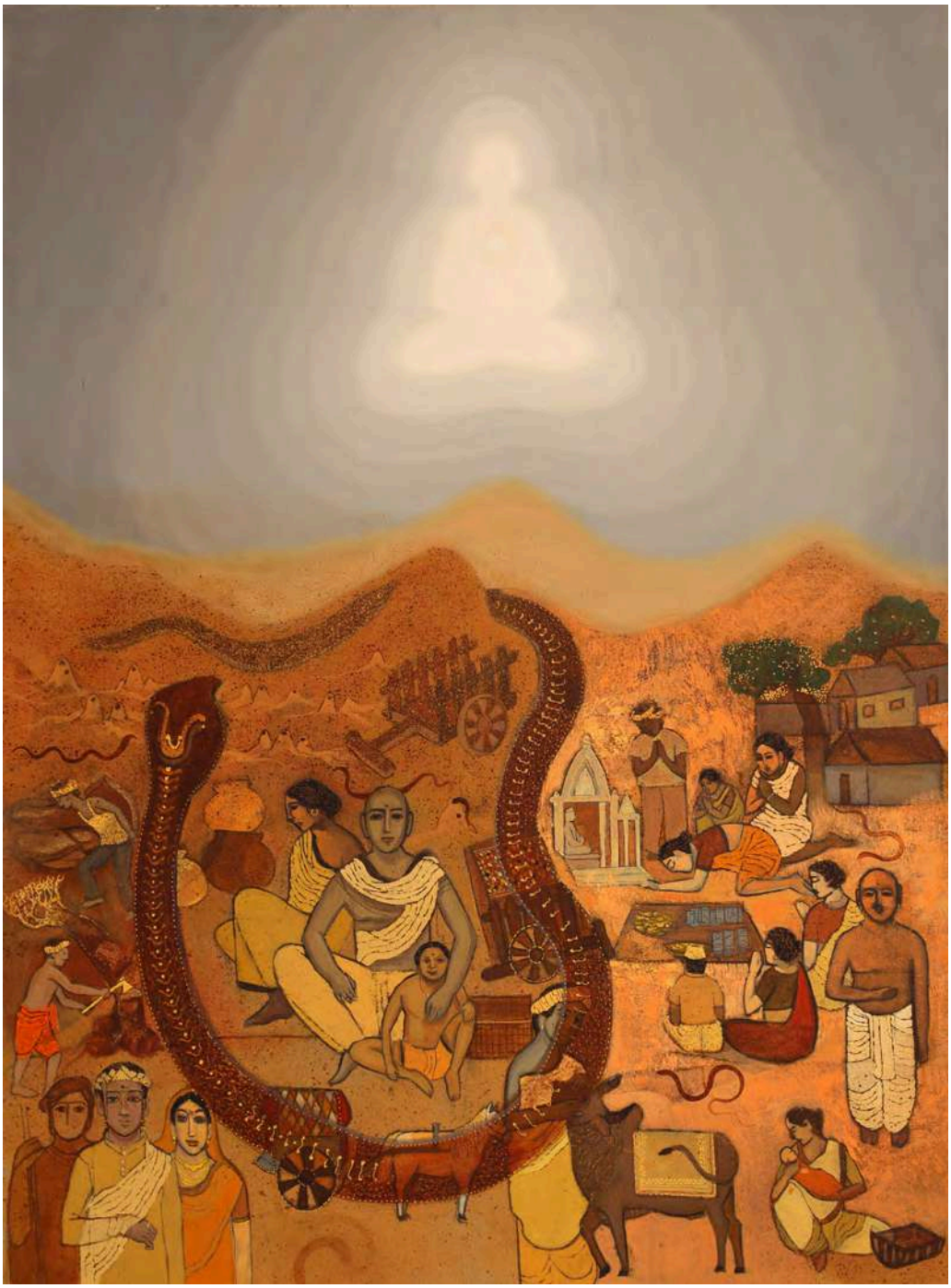

36” x 48” | Oil on Canvas (Vachanamrut -270)

**स्त्री, पुत्र, पैसे आदि में रचे-पचे रहना वह तो विषैला स्वाद है, सर्प की बड़ी बाँबी है; परन्तु शुभभाव में आना वह भी संसार है। परम पुरुषार्थी महाज्ञानी अन्तर में ऐसे विलीन हुए कि फिर बाहर नहीं आये। (वचनामृत नं. २७०)**

47" x 34" | Oil on Canvas (Vachanamrut -284)

प्रातःकाल जिसे राजसिंहासन पर देखा हो वही सायंकाल शमसान में राख होता दिखायी देता है। ऐसे प्रसंग तो संसार में अनेक बनते हैं, तथापि मोहविमूढ़ जीवों को वैराग्य नहीं आता। भाई! संसार को अनित्य जानकर तू आत्मोन्मुख हो। एक बार अपने आत्मा की ओर देख। बाह्य भाव अनंत काल करने पर भी शान्ति नहीं मिली, इसलिये अब तो अंतर्मुख हो। यह संसार या संसार के संयोग स्वप्न में भी इच्छनीय नहीं है। अन्तर का एक चिदानन्द तत्त्व ही भावना करने योग्य है। (वचनामृत नं. २८४)

# चित्रकार परिचय

सिद्धार्थ शिंगाडे

सिद्धार्थ शिंगाडे एक प्रसिद्ध भारतीय कलाकार है उनका जन्म २४ सितम्बर १९८३ में महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के पास एक छोटे से गांव तुलजापुर में हुआ। उन्होनें सन् १९९९-२००० में लातुर, महाराष्ट्र से कला शिक्षक, २००६ में 'एल.एस. रहेजा स्कूल ओफ आर्ट, मुम्बई' से चित्रकला में स्नातक व २००७-०८ में 'जे.जे. कालेज ओफ आर्ट, मुम्बई' से कला में स्नातक की शिक्षा पूर्ण की।

सिद्धार्थ बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली होने के साथ-साथ चित्रकला में विशेष रुचि रखते थे। अतः इसी क्षेत्र में आगे चलकर इन्होनें प्राथमिक व उच्च शिक्षा प्राप्त की, आप इनकी कला की प्रतिभा को इनके चित्रों के माध्यम से तो देख ही सकते हैं व इन्हें मिले कई पुरस्कारों से भी इनकी प्रतिभा का आंकलन किया जा सकता है।

इन्होनें कई जगह अपने एकल व संयुक्त रुप से कला प्रदर्शनी का आयोजन किया हैं। जिनमें २००४-०६ में प्रदर्शक कला प्रदर्शनी,मुम्बई; २०११ में एशिया कला प्रदर्शनी ढाका, बांग्लादेश; २०१७ में सासारन अंतर-राष्टीय प्रदर्शनी, मलेशिया; भारतीय कला सम्मेलन एवं २०२१ में सक्रेड अर्थ सोलो एट किंकिनी आर्ट गैलेरी आदि प्रमुख है।

इन्हें अपनी कला-कृति के लिये १९९९ में इन्डो-जापानीस असोसिएसन सर्टिफिकेट, २००६ में आर्ट सोसाइटी आफ इंडिया अवार्ड फार लैंडस्केप, २०१५ में राज्य कला पुरस्कार और २०१९ में भारत के राष्ट्रपति आदरणीय श्री रामनाथजी कोविंद द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया है।

इन्होनें २०१७ हिमालय कला शिविर नेपाल,पोखरा; २०१८ सासारन अंतर-राष्टीय कला शिविर, मलेशिया व हनोई; अंतर-राष्टीय कला शिविर, वियतनाम; २०२१ सावासा होम्स आर्टीस्ट रेसिडेंसी, बैंगलोर आदि कई शिविर व कार्यशाला में भी भाग लिया है।

सिद्धार्थ के अनुसार इन्हें धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने में बहुत पहले से रुचि व इच्छा थी, सोनगढ में पूज्य गुरुदेवश्री की जन्म जयंति के समय आयोजित आर्ट केम्प में हिस्सा लेकर इनकी वो रुचि आगे बढी तथा वहीं कुछ समय बाद जब गुरुकहान कला संग्रहालय के लिये 'गुरुदेवश्री वचनामृत' पर पेंटिग बनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो इन्हें अत्यधिक आनन्द हुआ। वचनामृतों के अध्ययन से उन्हें अध्यातम को जानने का अवसर मिला अतः वो भावना रखते हैं कि वो आगे भी इस क्षेत्र में इसी तरह का कार्य करते रहेगें।

www.gurukahanmuseum.org | info@gurukahanmuseum.org

GURU KAHAN ART MUSEUM

**Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust**
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West), Mumbai - 400 056. INDIA.
Tel. No: +91 22 2613 0820 / 2610 4912
info@vitragvani.com www.vitragvani.com /vitragvanee /c/vitragvanii

---

**: Museum Address:**
**Guru Kahan Art Museum, Shree Digambar Jain Swadhyay Mandir Campus, Songadh - 364250. Gujarat.**
info@gurukahanmuseum.org www.gurukahanmuseum.org
/gurukahanmuseum +91 82095 71103 /c/gurukahanartmuseum

9 789381 057537

www.facebook.com/gurukahanmuseum

# गुरुदेवश्री के वचनामृत

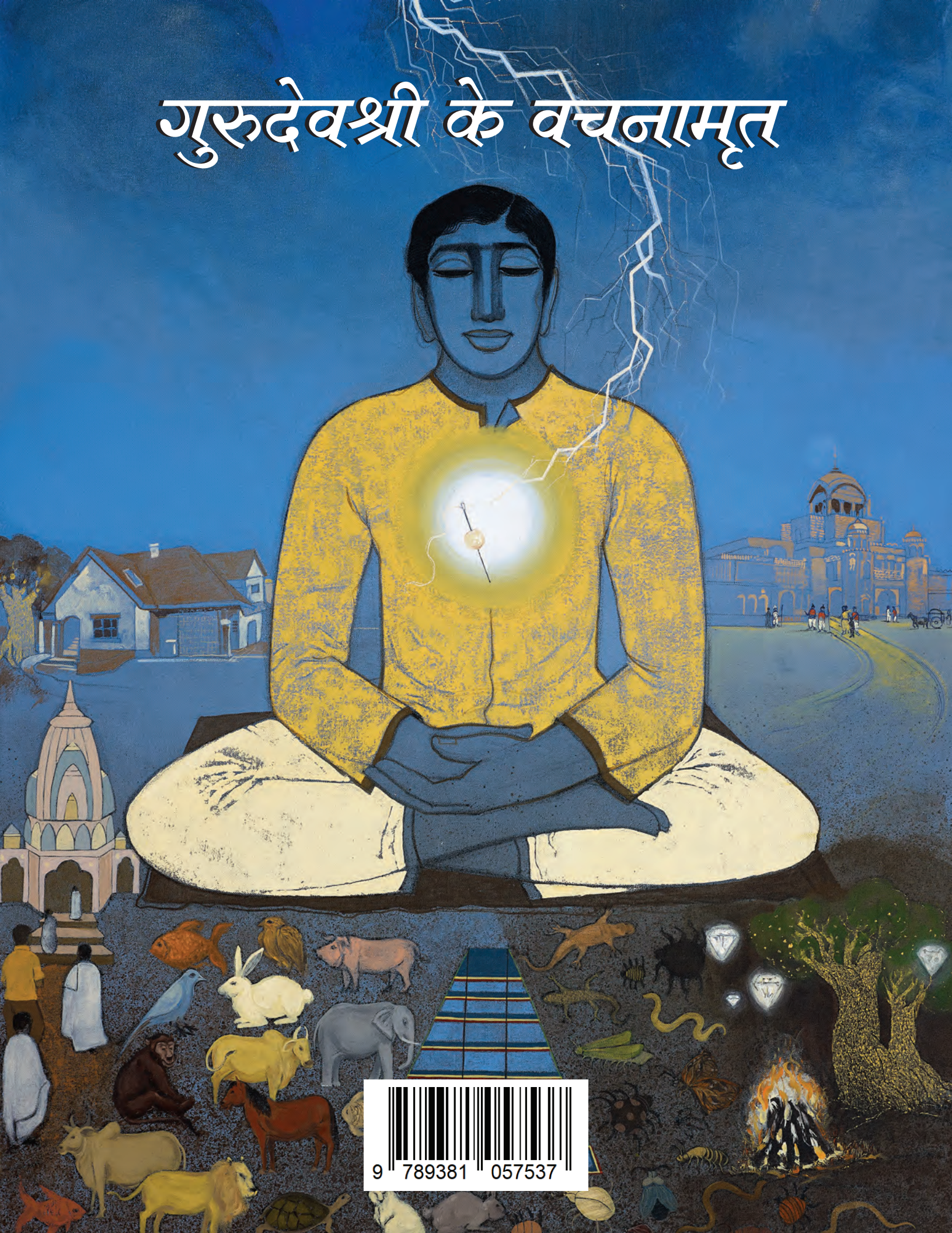

9 789381 057537